विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच

CVRU
DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रामन् लोक कला महोत्सव

दिनांक: 20 से 23 अप्रैल 2022 तक

C.V. Raman University
Registrar
(C.G.)

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

Chhattisgarh, Bilaspur AN AISECT GROUP UNIVERSITY

Approved by : PCI | AICTE | NCTE | BCI | Member of : AIU | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University

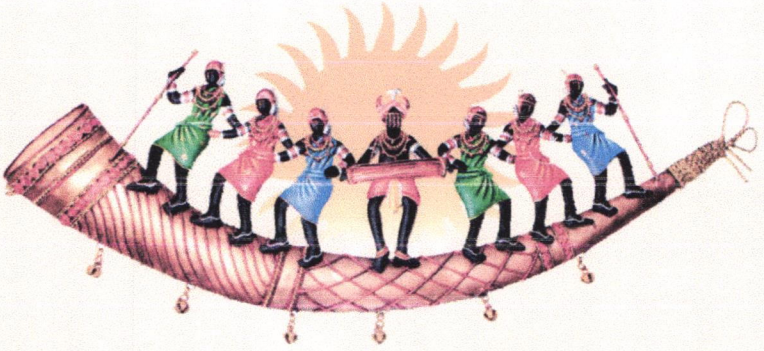

रामन् लोक कला महोत्सव 2022

प्रस्तावना

प्रस्तावना : डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय छ.ग. निजी विश्वविद्यालय का (स्थापना एवं संचालन) अधिनियम 2005 के प्रावधानों के अनुसार बिलासपुर जिला के दुरस्थ ग्रामीण वनचंल ग्राम कोटा में 3 नवम्बर 2006 को की गई। विश्वविद्यालय के स्थापना के समय से ही आसपास के ग्रामीण दूरस्थ अंचलों के विद्यार्थियों में विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा एवं संचार तकनीक से युवाओं को जोड़ने के लिए कार्य करती आ रही है। विश्वविद्यालय को गुणवता, स्वच्छता एवं गुणवतापूर्ण शिक्षा के लिए अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके है। साथ ही साथ विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा संचालन हेतु तथा प्रवेशित विद्यार्थियों को सार्वधिक रोजगार प्रदान करने के लिए भी पुरस्कृत किया जा चुका है। विश्वविद्यालय NIRF में भी रैंकिग प्राप्त कर चुकी हैं एवं NAAC द्वारा B+ ग्रेड प्रत्यायित किया गया है। विश्वविद्यालय अपने उत्कृष्ट अधोसंरचना एवं उच्च स्तरीय पुस्तकालय के लिए मध्य भारत में जाना जाता है, विश्वविद्यालय में केन्द्र एवं राज्य सरकार के योजनाओं के अनुरुप विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए प्रधानमंत्री कौशल केन्द्र, दीनदयाल उपाध्याय कौशल विकास केन्द्र एवं अनेक उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किये गये है। विश्वविद्यालय में भाषा की शिक्षा हेतु लैंगवेज लेब की व्यवस्था की गई है। आत्मनिर्भर भारत, समग्र भारत हेतु रमन् इनिक्वेशन सेन्टर स्थापित किये गये हैं। अपने विद्यार्थियों को कलात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा आसपास के गाँवों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरुकता लाने लोककला, लोककला संस्कृति के संरक्षण एवं संर्वधन तथा लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने के लिए समुदायिक रेडियो (रेडियो रामन् 90.4) की स्थापना गई है। ग्रामीण प्राद्यौगिकी विभाग के माध्यम से विद्यार्थियों एवं क्षेत्र के युवाओं को ग्रामीण तकनीकी से जोड़ते हुए रोजगार स्वरोजगार के लिए उन्मुख किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय अपने स्थापना काल से ही छत्तीसगढ़ के उत्कृष्ठ पंरपरा लोककला एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं इससे अपने विद्यार्थियों एवं प्रदेश के युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिये संकल्पित है। विलुप्त होती कला एवं संस्कृति को मंच प्रदान करने तथा इसे शिक्षा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील रहा है। सन् 2010 में कला संकाय का स्थापना कर क्षेत्र के कला एवं पुरातातविक संपदा से विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए इतिहास, समाजशास्त्र, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, प्राच्यभाषा विभाग आदि में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षा प्रारंभ की। विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष होने वाले कुल उत्सव में विद्यार्थियों के कलात्मक रुझान एवं लोककला के प्रति उनके जुड़ाव को देखते हुए विश्वविद्यालय ने छत्तीसगढ़ लोककला एवं संस्कृति केन्द्र स्थापित किया गया।

Registrar

रविन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति केन्द्र की स्थापना की गई नवम्बर माह को छत्तीसगढ़ लोककला उत्सव हेतु निर्धारित किया गया जो की प्रदेश एवं विश्वविद्यालय की स्थापना माह है। विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी भाषा को जन-जन की भाषा से प्रशासनिक भाषा एवं राजभाषा बनाने के लिए एवं छत्तीसगढ़ी भाषा में शोध एवं सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ तथा अनेक साहित्यिक गतिविधि हेतु वनमाली सृजनपीठ की स्थापना की गई। कला एवं संस्कृति की शिक्षा हेतु ललित कला विभाग एवं रायगढ़ कत्थक केन्द्र की स्थापना की गई।

प्रदेश के युवापीढ़ी एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति के प्रति रुझान तो है, परन्तु युवापीढ़ी में छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक प्रतीकों कला-संस्कृति एवं परम्पराओं की जानकारी के अभावों को देखते हुए विश्वविद्यालय परिसर विद्यार्थियों के शोध एवं सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए लोककला केन्द्र जिसमें की छत्तीसगढ़ की सभी लोक कलाओं, लोक संस्कृति, लोक संगीत, लोक परम्पराओं जानकारी प्रदर्शित / स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय परिसर में छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली के प्रतीक चिन्हों को संरक्षित करने तथा इससे भावी पीढ़ी को जोड़ने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना की गई। संजोही में विद्यार्थियों द्वारा अपने लोककला एवं संस्कृति के विरासत तथा छत्तीसगढ़ी जीवन के प्रतीक चिन्हों को संकलित करने में विद्यार्थियों की भूमिका उल्लेखनीय रही। वर्तमान में विश्वविद्यालय का छत्तीसगढ़ी कला केन्द्र एवं छत्तीसगढ़ी संजोही शोध एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिये उत्कृष्टता केन्द्र के रुप में कार्य कर रहा है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्टता केंद्र

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना की गई है। जो निम्नानुसार है:-

1. रामन सेंटर फॉर साइंस कम्युनिकेशन,
2. सेंटर फॉर बायोटेक्नालॉजी रिसर्च,
3. सेंटर फॉर छत्तीगढ़ी लोक कला, संस्कृति एवं साहित्य,
4. सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर रुरल टेक्नोलॉजी एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट
5. सेंटर फॉर रिनिवेबल ग्रीन एनर्जी,
6. सेंटर फॉर परफार्मिंग आर्ट्स एंड रायगढ़ कला कथक,
7. सेंटर फॉर फ्यूचर स्किल एकेडमी,
8. सेंटर फॉर रिमार्ट सेसिंग एंड जीआईएफ
9. सेंटर फॉर इंक्यूबेशन एंड स्टार्टअप,
10. सेंटर फॉर एक्सीलेंस फॉर एडवांस एनवारमेंटल रिसर्च,
11. छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजन पीठ
12. रविन्द्रनाथ टैगोर लोककला केंद्र
13. वनमाली सृजन पीठ

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति केन्द्र के माध्यम से प्रयास

विश्वविद्यालय में स्थापित छत्तीसगढ़ी लोक कला एवं संस्कृति केंद्र द्वारा छत्तीसगढ़ के आदिवासी युवाओं में लोक कला एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम इस केंद्र द्वारा आयोजित किया जाता है जिसके माध्यम से प्रतिभावान आदिवासी युवाओं को उचित मंच प्रदान किया जाता है साथी साथ ही आदिवासी युवाओं को कला संस्कृति पर आधारित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से समय-समय पर प्रशिक्षण भी किया जाता है, ताकि आदिवासी युवाओं और उनमे विद्यमान प्रतिभाओं को और बेहतर निखारा जा सके। इसके अंतर्गत लोक साहित्य लोक संस्कृति एवं लोक कला के विविध आयामों विविध रुपों एवं पांडुलिपियों को डिजिटल फार्म में संरक्षित कर इन संस्कृतियों को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। उक्त प्रयासों में सुखद परिणाम भी आने लगे हैं विश्वविद्यालय के चतुर्थ वर्ग कर्मचारी श्रीमती शंकुतला भारद्वाज ने भरथरी गायन की विलुप्त होती परंपरा एवं ज्ञान को संरक्षित करते हुए राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाने में कामयाब रही है। जितेन्द्र गुप्ता छत्तीसगढ़ी मंच में स्थान हासिल किया। अरिहन्त उपाध्याय ने ऑल इंडिया अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय प्रतियोगिता सिगमेंट सांस्कृतिक कार्यक्रम में गोल्ड मैडल प्राप्त किया।

छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ

छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ के माध्यम से छत्तीसगढ़ी भाषा में शोध एवं साहित्य से विद्यार्थियों को जोड़ते हुये नई तकनीकी के माध्यम से शोध के क्षेत्र में इन युवाओं को प्रेरित किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ी साहित्य की नई - नई विधाओं से अवगत कराते हुये नवोदित पीढ़ी को राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर नवीन तथ्यों की खोज कराकर शोध के क्षेत्र में नयी उपलब्धियां हासिल करने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। भौतिक एवं व्यवहारिक शोध को बढ़ावा मिल सके। छत्तीसगढ़ के नये रचनाकारों को मंच प्रदान करना और वरिष्ठ रचनाकरों का अनुभव लेकर एक नयी साहित्यिक पीढ़ी का निर्माण कार्य पीढ़ी द्वारा सतत् रुप से किया जा रहा है। उक्त प्रयासों के सुखद परिश्रम भी आने लगे है। विश्वविद्यालय की चतुर्थ वर्ग कर्मचारी शकुंतला भारद्वाज जो भरथरी गायन की विलुप्त होती परम्परा एवं ज्ञान को संरक्षित करते हुए राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिस्थापित हुई। जितेन्द्र गुप्ता ने छत्तीसगढ़ी मंच में स्थान प्राप्त किया। अरिहन्त उपाध्याय **All India International University Competition** में तृतीय स्थान प्राप्त कर सांस्कृतिक कार्यक्रम में गोल्ड मेडल भी हासिल किया।

छत्तीसगढ़ संजोही की स्थापना

छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली एवं प्रतीक चिन्हों को सरंक्षित एवं संवर्धित करने के उद्देश्य डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी कला एवं संस्कृति केंद्र एवं छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना की गई। छत्तीसगढ़ी कला एवं संस्कृति केंद्र में छत्तीसगढ़ी गायन, कला, संगीत, वादन,नृत्य, ग्रामीण प्रौद्योगिकी के साधन, सहित सभी विषयों पर दुलर्भ कला केन्द्र की स्थापना की गई है। इसके साथ विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी संजोही की स्थापना भी की गई। इसका उद्देश्य है कि भावी पीढ़ी को छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति एवं छत्तीसगढ़ी जीवन शैली की मूल रुप से जानकारी हो साथ ही साथ यह जानकारी उन्हें वास्तविक रुप में ही हस्तांतरित की जाए। छत्तीसगढ़ के प्रतीक चिन्हों को संरक्षित किया जाए। इस कल्पना को साकार रुप देने के लिए विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ उनके अभिभावकों ने अमूल्य सहयोग दिया है। यह दोनों केंद्र ज्ञान केंद्र के रुप मे कार्य कर रहे हैं। यह संजोही छत्तीसगढ़ी कला,संस्कृति एवं जीवन शैली के क्षेत्र में शोध करने वाले विद्यार्थियों एवं प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों के लिए सहायक है। वास्तव में आत्म निर्भर भारत की कल्पना ग्रामीण जीवन शैली की है, क्योंकि गांव की जीवन आत्मनिर्भर जीवन है। इसलिए ही छत्तीसगढ़ी ग्रामीण प्रौद्योगिकी के परंपरागत शैली को जीवंत रुप में प्रदर्शित करने का प्रयास छत्तीसगढ़ी संजोही में किया गया है। साथ ही रोजमर्रा के कार्यों में समाज की आत्म निर्भरता एवं उसकी कलात्मक अभिवक्ति को संजोही में प्रदर्शित किया गया है। छत्तीसगढ़ परिवेश में या गांव के परंपरागत खेलों की खेल साम्रगी, महिलाओं के श्रृगांर एवं परिधान, परंपरागत ज्ञान कला एवं जीवन शैली को जीवंत रुप में दिखाया गया है। छत्तीसगढ़ी संजोही में सभी सामानों का दुर्भल संकलन किया गया है। खेती, किसानी,खेल, खाद्य, संस्कारों के समय उपयोग होने वाली वस्तुएं, मान्यताओं के अनुसार सामान, धर्म, परंपरा,आवश्यकता, अनिवार्यता एवं जीवन शैली से जुड़ी सभी वस्तुओं का दुर्लभ संकलन है। छत्तीसगढ़ी परंपरा ज्ञान, कला संस्कृति एवं इसके प्रतीक चिंहों को संरक्षित कर इस परंपरा ज्ञान को भावी पीढ़ी को मूल रुप में हस्तांतरित करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ी संजोही स्थापित है। यहां रोजमर्रा के कार्यो में समाज की आत्म निर्भरता एवं उसकी कलात्मक अभिवक्ति को संजोही में प्रदर्शित किया गया है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोक कला महोत्सव

डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय द्वारा क्षेत्र एवं प्रदेश के विभिन्न कलाओं को संरक्षित एवं सर्वधित करने तथा छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति को मूलरुप से जीने वाले लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 2020 में राष्ट्रीय स्तर रामन् लोककला महोत्सव प्रांरभ किया गया। तीन दिन तक चलने वाले महोत्सव में जहां दूसरे पहर में मंच पर लोककला के विभिन्न विधाओं का रंगारंग प्रस्तुति लोक कलाकारों द्वारा किया जाता है। वहीं रोजमर्रा के कार्यो में समाज की आत्मनिर्भरता एवं उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए छत्तीसगढ़ी ग्रामीण प्रौद्योगिकी को विभिन्न स्थलो में प्रदर्शित किया गया था, जो युवाओं को आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार के लिए प्रेरित करता है तथा महोत्सव में छत्तीसगढ़ की पुरातन मनोरंजन प्रणाली मेला के प्रारुपों को भी जीवंत किया गया।

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा प्रदान करने के साथ प्रदेश की लोककला, संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण एवं संर्वधन के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके लिए वर्ष 2019 से प्रतिवर्ष रामन लोककला महोत्सव का आयोजन किया है। जिसमें छत्तीसगढ़ के सभी जिलों, दूरस्थ ग्रामीण अंचल और वनांचलों के लोक कलाकारों को मंच प्रदान किया जाता है और वे अपने कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हैं। इस महोत्सव का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की लोककला, संस्कृति और साहित्य संरक्षण और संर्वधन के साथ उसके मूल रुप में ही भावी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना है। इस महोत्सव में वर्ष 2020 में रायगढ़ कथक पर केंद्रित राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसमें भारत के सभी राज्यों के राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों ने शिरकत की थी। इस महोत्सव ने कम समय में ही देश भर में अपनी ख्याति अर्जित की है।

लोक उत्सव में प्रमुख रुप से छत्तीसगढ़ के सुदूर वनांचलों जैसे बस्तर अबूझमाड़ नारायणपुर, सुकमा, रायगढ़, तमनार सुरगुजा क्षेत्र के स्थानीय आदिवासी कलाकारों द्वारा मूल आदिवासी नृत्यों जैसे कर्मा नृत्य, ककसाड़ नृत्य, मड़ई नृत्य, गौर नृत्य, मांदरी नृत्य, गेड़ी नृत्य का दर्शन किया। इसके सांथ ही लोक उत्सव के मंच में रतनपुरिहा गम्मत, देवार गीत पंडवानी, भरथरी, ढोलामारु, बांस गीत, का भी मंचन हुआ। इस लोक उत्सव में विश्वविद्यालय के द्वारा गोद लिए गए पांच ग्रामों के स्थानीय उत्पादों के सांथ सांथ बस्तर अबूझमाड़ नारायणपुर, सुकमा, रायगढ़, तमनार सुरगुजा क्षेत्र के स्थानीय हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प जैसे बेल मेटल आर्ट, काष्ट कला, बांस कला, मृदा शिल्प आदि के साथ-साथ विभिन्न शासकीय विभागों की प्रदर्शनी एवं स्टाल भी लगाए गए। यह आयोजन वर्ष 2019 से सतत् रुप से विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष 2022 में भी 20 अप्रैल से 22 अप्रैल तक रामन् लोककला महोत्सव का सफल आयोजन विश्वविद्यालय में किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ में लोक गीतों, लोक नृत्यों, लोक नाट्य और लोक गाथाओं का समृद्ध इतिहास रहा है, लेकिन अब अनेक लोक कलाएं लुप्त होने की कगार पर हैं इनके संरक्षण के प्रयास की ओर विश्वविद्यालय ने अपना कदम बढ़ाया जिसने रामन् लोक कला महोत्सव का रुप लिया। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकार आधुनिकता की चकाचौंध में विलुप्त न हो जाए इसलिए प्रदेश के कलाकारों की कला को मंच प्रदान कर एवं भावी पीढ़ी को उनकी कला हस्तांतरित करने के उद्देश्य से डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय के द्वारा तीन दिवसीय रामन् लोककला महोत्सव का आयोजन व 2019 से लगातार किया जा रहा है। कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ऐसी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना है जो प्रदेश की लोक कला को मूलरुप में समेटे होने के बाद भी मंच प्राप्त न कर पाया हो। छत्तीसगढ़ राज्य में ऐसी अनेक लोक विधाएं और लोक कलाकार हैं जिनके विषय में लोग अपरिचित हैं और यदि परिचित हैं भी, तो युवा पीढ़ी उन विधाओं से जो अपने मूल स्वरुप से अलग हो चुके हैं। ऐसी विलुप्त होती लोककला को सरंक्षित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव आयोजित करने की पहल की है, जिसका एक और उद्देश्य विद्यार्थियों एवं प्रदेश के रहवासियों में छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक संस्कृति और लोक साहित्य के प्रति जागरुकता लाना और अंचल की परंपरा और संस्कृति के मूल रुप को सवंर्धित करना है, साथ ही छत्तीसगढ़ की विलुप्त होती संस्कृति और परंपरा का ज्ञान भरपूर मात्रा में विद्यार्थियों एवं लोगों तक पहुंचे, यही इस आयोजन का मूल उद्देश्य है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kota, Bilaspur (C.G.)

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

CVRU
DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

रामन् लोक कला महोत्सव

रामन् लोक कला महोत्सव

दिनांक: 20 से 22 अप्रैल 2022 तक | स्थान : डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, परिसर

मुख्य कार्यक्रम

दिनांक: 20 अप्रैल 2022

समय: शाम 7 बजे से प्रारंभ

सिद्धेश्वर करमा नृत्य मंडली (पड़िगांव, तमनार रायगढ़)
करमा नृत्य

गागरू राम ककसाड़ नृत्य दल (कोरेंडा, बस्तर)
ककसाड़ नृत्य

पंथी साधेलाल रात्रे
नर्तक दल

श्रीमती शकुंतला भारद्वाज (बिलासपुर)
भरथरी

मुख्य कार्यक्रम

दिनांक: 21 अप्रैल 2022

समय: शाम 7 बजे से प्रारंभ

डॉ. फेढोरा बरवा समूह (बिलासपुर)
करमा नृत्य

श्री चेतन देवांगन (दुर्ग)
पंडवानी

श्री सहदेव कुमार कैवर्त (बिलासपुर)
डंडा नृत्य

गुंडाधुर लोक कला मंच (किदरवाड़ा, सुकमा, बस्तर)
धुरवा मड़ई नृत्य

डॉ. प्रिया श्रीवास्तव
कथक

मुख्य कार्यक्रम

दिनांक: 22 अप्रैल 2022

समय: शाम 7 बजे से प्रारंभ

श्री काशीराम साहू (रतनपुर)
गम्मत

श्रीमती रजनी रजक (भिलाई)
ढोलामारू

श्रीमती रेखा देवार (कुकुसदा)
देवार गीत

अबूझमाड़ियां गौर नृत्य ककसाड़ नृत्य समूह (खरगांव, नारायणपुर, बस्तर)
गौर, गेड़ी, ककसाड़ नृत्य

छत्तीसगढ़ी व्यंजन | खेल खिलौने | बच्चों के लिए झूला | पारंपरिक लोक नृत्य | बस्तर का जनजातीय संगीत | हस्तशिल्प मेला मड़ई

रामन् लोक कला महोत्सव में आप सादर आमंत्रित है...

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर (छ.ग.) संपर्क करें:- किशोर सिंह ठाकुर- मो. 9827979020, 7000...

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन प्रथम दिवस

डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय में 20.04.2022 को रामन् लोक कला महोत्सव 2022 का आगाज हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रगान एवं कुल गीत विश्वविद्यालय के रामन् बैंड द्वारा गया। महोत्सव का शुभारंभ प्रदेश की महामहिम राज्यपाल सुश्री

दीप प्रज्जवलित करते हुए महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसूईया उइके जी

अनुसुइया उईके के कर कमलों से किया गया। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल ने कहा कि डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय ऐसे आयोजनों के माध्यम से आदिवासी कला संस्कृति साहित्य परंपराओं को बड़ा मंच दे रहा है, और ऐसे आयोजन से ही वह विश्व पटल पर अपना स्थान पहचान बना सकेंगे। उन्होंने कहा कि मुझे यह बात कहने में गर्व है कि देश विदेश में आज आदिवासी संस्कृति को स्वीकार किया जाता है हर अवसर पर, वैश्विक स्तर पर, एक अलग पहचान आदिवासी संस्कृति की है। उन्होंने यह भी कहा कि पूरी दुनिया में केवल छत्तीसगढ़ की संस्कृति ऐसी है जिसकी महक हर किसी को बहुत पसंद आती है। इसके साथ छत्तीसगढ़ का संगीत ऐसा मधुर और हृदय को छू लेने वाला है। जिससे हर व्यक्ति मंत्रमुग्ध हो जाता है। यहां के आदिवासी लोग बहुत ही भोले भाले हैं, छल कपट से हमेशा दूर रहते हैं। ऐसे समाज के उत्थान के लिए, उन्हें मंच प्रदान करने के लिए, उन्हें वैश्विक स्तर तक स्थापित करने के लिए डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय यह कार्य कर रहा है। जो अनुकरणीय हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की प्रशंसा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय परिवार बहुत ही सौभाग्यशाली है, जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति हैं जिनका हर क्षेत्र में बराबर अधिकार है।

सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसूईया उइके जी

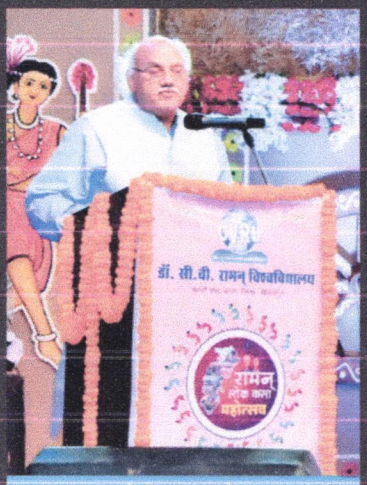

सम्बोधित करते हुए कुलाधिपति संतोष चौबे जी

इस अवसर पर उपस्थित डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि. आदिवासी क्षेत्र में स्थापित प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जो आदिवासी लोगों को युवाओं को शिक्षा की मूल धारा से जोड़ने और उन्हें समाज के बराबर स्थापित करने के लिए कार्य कर रहा है। उन्होने बताया कि इसके साथ यह प्रधानमंत्री कौशल विकास केंद्र संचालित करने वाला एकमात्र विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है. यहां सामुदायिक रेडियो रामन स्थापित किया गया है, जो कि केंद्र सरकार के सहयोग से स्थापित है। उन्होंने कहा कि ग्रुपएशिया का सबसे बड़ा आयोजन विश्वरंग आयोजन भी करता है जिसमें कि 50 से अधिक देश शामिल होते हैं.। उन्हें उन्होंने भारतीय भाषाओं, तकनीक सहित विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे विभिन्न क्षेत्रों के कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होने बताया कि नई शिक्षा नीति के अनुसार इसके पूर्व ही विवि कार्य कर रहा है। उन्होंने बताया कि विवि की माता संस्था आईसेक्ट ने कथादेश, कथा मध्य प्रदेश तथा कथा विश्व का प्रकाशन किया है । ऐसे कई साहित्यिक और शैक्षणिक गतिमान लगातार स्थापित करते जा रहा है। विज्ञान कथाओं को हिन्दी में लिखने का कार्य सतत् रूप से जारी रहा है एवं हिन्दी में विज्ञान की मासिक पत्रिका भी जारी की जाती हैं।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे जी

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि विश्वविद्यालय सदैव से ही स्थानीय भाषा बोली कला संस्कृति साहित्य को बढ़ावा देते आ रहा है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ी विभाग की स्थापना भी की गई है। साथ ही साथ लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में बीते कई वर्षो से रामन लोक कला महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह महोत्सव पूर्ण रुप से लोक कलाकार छत्तीसगढ़ी कला संस्कृति साहित्य और परंपराओं को समर्पित है।

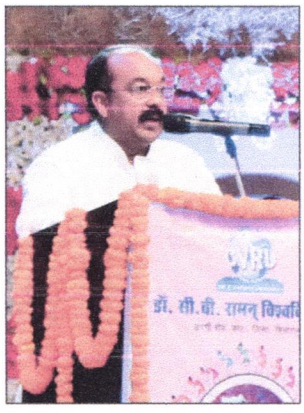

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित बिलासपुर सांसद अरुण साव ने कहा कि ड सी वी रामन विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति परंपराओं के सम्मान को पुनः प्रतिस्थापित करने का कार्य कर रहा है निश्चित रुप से आदिवासियों को मंच मिला है उन्हें ऐसे आयोजन में शामिल होने से सम्मान मिलेगा आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह वैश्विक मंच तक अपने आप को सबके साथ महसूस कर पाएंगे. कार्यक्रमो के आयोजन के लिए बिलासपुर सांसद अरुण साव जी ने विश्वविद्यालय की भूरीभूरी प्रशंसा की।

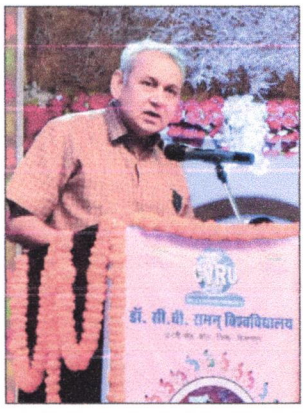

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि भारत गांवों में बसता है और यहां की कला संस्कृति ही जीवन हैं। यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है, कि वर्ष 2019 से लगातार यहां रामन लोक कला महोत्सव आयोजित किया जाता है। विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की लोक कला संस्कृति साहित्य को संरक्षण देना और इसके संवर्धन के लिए कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय में शिक्षा के साथ संस्कृति का अद्भुत संयोग है। जल जंगल और जमीन के असली मालिक आदिवासी ही हैं और ऐसे लोगों की कला संस्कृति और साहित्य परंपराओं को संरक्षित करने का महान कार्य विश्वविद्यालय कर रहा है।

C.V. Raman University
Registrar
Bilaspur (C.G.)

इस अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि सही मायने में डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय आभाव में रचना शीलता की पराकाष्ठा का नाम है। उन्होंने बताया कि बहुत ही कम समय और सुविधाओं के अभाव में विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था, लेकिन रचनाशीलता व संघर्ष के कारण आज बहुत ही कम समय में विश्वविद्यालय मध्य भारत का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय के रुप में स्थापित है। विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ शिक्षा देने के साथ ही साथ छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति, साहित्य को भावी पीढ़ी तक वास्तविक रुप में हस्तांतरित करने का बीड़ा भी विश्वविद्यालय ने उठाया है। इसके लिए पिछले कई वर्षो से रामन लोक कला महोत्सव कराया जाता है। हर साल इसका विस्तार हो रहा है, जिसमें की वास्तविक और जमीनी कलाकार को हम मंच प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अरविंद तिवारी ने कहा विश्वविद्यालय अपने विधि द्वारा निर्धारित दायित्व को पूरा करते हुए, लोक कला संस्कृति तथा परंपरागत ज्ञान को संरक्षित संवर्धित करने के लिए संकल्पित है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष रामन लोक कला महोत्सव आयोजित किया जा रहा है,ताकि नई पीढ़ी को इससे सीधे तौर पर जोड़ा जा सके। आभार प्रकट डॉ.अरविंद तिवारी ने किया।

कर्मा नृत्य

छत्तीसगढ़ अंचल के आदिवासी समाज का प्रचलित लोक नृत्य है। भादों मास की एकादशी को उपवास के पश्चात करमवृक्ष की शाखा को घर के आंगन या चौगान में रोपित किया जाता है। दूसरे दिन कुल देवता को नया अन्न समर्पित करने के बाद ही उसका उपभोग शुरु होता है। कर्मा नृत्य नई फसल आने की खुशी में किया जाता है।

यह नृत्य छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति का पर्याय है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी, गैर-आदिवासी सभी का यह लोक मांगलिक नृत्य है। कर्मा नृत्य, सतपुड़ा और विंध्य की पर्वत श्रेणियों के बीच सुदूर ग्रामों में भी प्रचलित है। शहडोल, मंडला के गोंड और बैगा तथा बालाघाट और सिवनी के कोरकू और परधान जातियाँ कर्मा के ही कई रुपों को नाचती हैं। बैगा कर्मा, गोंड़ कर्मा और भुंइयाँ कर्मा आदिजातीय नृत्य माना जाता है। छत्तीसगढ़ के एक लोक नृत्य में 'करमसेनी देवी' का अवतार गोंड के घर में माना गया है, दूसरे गीत में घसिया के घर माना गया है।

कर्मा नृत्य के प्रकार

यों तो कर्मा नृत्य की अनेक शैलियाँ हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ में पाँच शैलियाँ चलित हैं, जिसमें झूमर, लंगड़ा, ठाढ़ा, लहकी और खेमटा हैं। जो नृत्य झूम-झूम कर नाचा जाता है, उसे 'झूमर' कहते हैं। एक पैर झुकाकर गाया जाने वाल नृत्य 'लंगड़ा' है। लहराते हुए करने वाले नृत्य को 'लहकी' और खड़े होकर किया जाने वाला नृत्य 'ठाढ़ा' कहलाता है। आगे-पीछे पैर रखकर, कमर लचकाकर किया जाने वाला नृत्य 'खेमटा' है। खुशी की बात है कि छत्तीसगढ़ का हर गीत इसमें समाहित हो जाता है। कर्मा नृत्य में स्त्री-पुरुष सभी भाग लेते हैं। यह वर्षा ऋतु को छोड़कर सभी ऋतुओं में नाचा जाता है। सरगुजा के सीतापुर के तहसील, रायगढ़ के जशपुर और धरमजयगढ़ के आदिवासी इस नृत्य को साल में सिर्फ चार दिन नाचते हैं। एकादशी कर्मा नृत्य नवाखाई के उपलक्ष्य में पुत्र की प्राप्ति, पुत्र के लिए मंगल कामनाय अठई नामक कर्मा नृत्य क्वांर में भाई-बहन के प्रेम संबंध दशई नामक कर्मा नृत्य और दीपावली के दिन कर्मा नृत्य युवक-युवतियों के प्रेम से सराबोर होता है।

सिद्धेश्वर कर्मा नृत्य मंडली तमनार रायगढ़ के द्वारा प्रस्तुति

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kota, Bilaspur (C.G.)

वस्त्र तथा वाद्ययंत्र

कर्मा नृत्य में मांदर और झांझ-मंजीरा प्रमुख वाद्ययंत्र हैं। इसके अलावा टिमकी ढोल, मोहरी आदि का भी प्रयोग होता है। कर्मा नर्तक मयूर पंख का झाल पहनता है, पगड़ी में मयूर पंख के कांड़ी का झालदार कलगी खोंसता है। रूपया, सुताइल, बहुंटा ओर करधनी जैसे आभूषण पहनता है। कलई में चूरा, और बाँह में बहुटा पहने हुए युवक की कलाइयों और कोहनियों का झूल नृत्य की लय में बड़ा सुन्दर लगता है। इस नृत्य में संगीत योजनाबद्ध होती है। राग के अनुरुप ही इस नृत्य की शैलियाँ बदलती है। इसमें गीता के टेक, समूह गान के रूप में पदांत में गूँजते रहता है। पदों में ईश्वर की प्रस्तुति से लेकर श्रृंगार परक गीत होते हैं। मांदर और झांझ की लय-ताल पर नर्तक लचक-लचक कर भाँवर लगाते, हिलते-डुलते, झुकते-उठते हुए वृत्ताकार नृत्य करते हैं।

ककसाड़ नृत्य

बस्तर के घने जंगलों में निवास करने वाले अबूझमाडिया, गोंड, मुरिया सभी लोगों का ककसाड़ से विशेष नाता होता है ये आदिवासियों के जीवन शैली में प्रकृति से सीधा संबंध होता है इस प्रकार जीवन से जुड़ी हर प्रकार की गतिविधि को प्रकृति से जोड़कर जीवन जीते हैं उनके द्वारा जो भी फसल उगाते हैं उसे सबसे पहले प्रकृति सम्मत अपने इष्ट को पहले समर्पित करते हैं फिर उसके पश्चात स्वयं ग्रहण करने की परंपरा का निर्वहन करते हैं । वर्ष भर किसी न किसी उत्सव के साथ जीवन यापन करने वाले आदिवासी ककसाड़ को भी एक उत्सव के रूप में मनाते हैं । इस अवसर पर ग्राम देवी को प्रसन्न करने के लिए सभी ग्राम वासी देवी से अनुमति लेकर शिकार करने जाते हैं और जब शिकार करके गांव वापस लौटते हैं तो खुशी से उत्सव जैसा माहौल होता है जिसे आज भी गांव के युवक युवती इस परंपरा का निर्वहन करते हुए सामूहिक रुप से ककसाड़ के अवसर पर गौर मार नृत्य गोटूल में मनोरंजन के रुप में करते आ रहे हैं। ककसाड़ नृत्य में अपने नृत्क दल को पहली बार विश्वविद्यालय रामन् लोककला के माध्यम से राश्ट्रीय मंच उपलब्ध कराया, कलाकार काफी खुश थे एवं प्रदेश के महामहिम राज्यपाल के साथ समूह चित्र भी लिया, महामहिम राज्यपाल ने पुष्पगुच्छ देकर सभी कलाकारों का उत्साह वर्धन किया ।

गागरु राम ककसाड़ नृत्य दल बस्तर द्वारा ककसाड़ नृत्य की प्रस्तुति

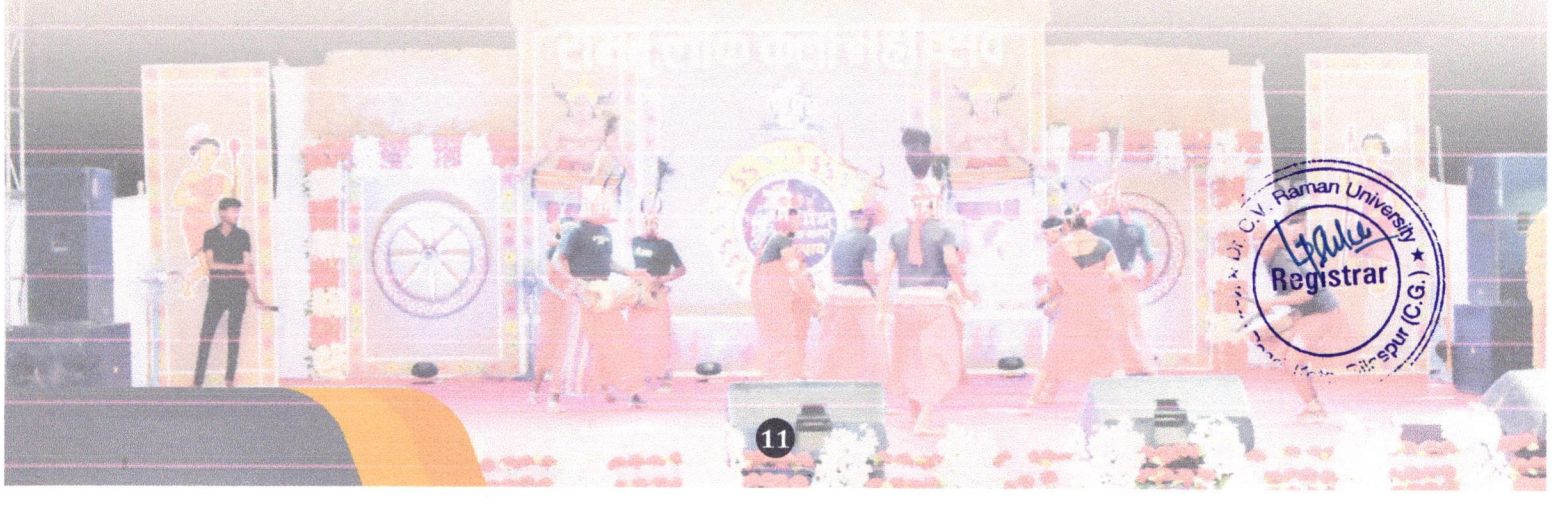

पंथी नृत्य

छत्तीसगढ़ राज्य का पंथी नृत्य इस प्रदेश के सतनामी समुदाय का पारंपरिक नृत्य है। यह पुरुष प्रधान नृत्य है। माना जाता है कि महासमुंद जिले के श्री नकुल ढ़ीड़ही ने सर्वप्रथम 1935 में पंथी नृत्य को प्रारंभ किया था तब से आज तक पंथी नृत्य अनवरत रुप से किया जा रहा है। इस नृत्य के गीतों में मनुष्य जीवन के महत्व के साथ आध्यात्मिक संदेश भी रहता होता है। यह द्रुत गति का नृत्य है, जिसमें सफ़ेद रंग की धोती, कमरबन्द तथा घुंघरु पहन कर नर्तकों के द्वारा शारीरिक कौशल का प्रदर्शन किया जाता है। पंथी नृत्य में मृदंग एवं झांझ की लय के साथ नर्तकों का समूह आंगिक चेष्टाएं करते हुए मानव मीनारों की रचना और हैरतअंगेज करतब दिखाता है। इस नृत्य में गुरु घासीदास जी के जीवन चरित्र का वर्णन किया जाता है और बीच-बीच में गुरु घासीदास बाबा का जयकारा भी लगाया जाता है। पंथी नृत्य की वेशभूशा सादी होती है। अधिक वस्त्र या श्रृंगार पंथी नर्तकों की सुविधा की दृश्टि से अनुकूल भी नहीं है। वर्तमान समय के साथ इस नृत्य की वेशभूशा में कुछ परिवर्तन आया है। अब रंगीन कमीज और जैकेट भी पहन लिये जाते हैं। पंथी नृत्य के गीतों पर निर्गुण भक्ति एवं दर्शन का गहरा प्रभाव है। कबीर, रैदास तथा दादू आदि संतों का वैराग्य-युक्त आध्यात्मिक संदेश भी इसमें पाया जाता है। इसमें जितनी सादगी है, उतना ही आकर्षण और मनोरंजन भी है। यह नृत्य दो प्रकार का होता है- बैठ पार्टी और खड़ी पार्टी। बैठ पार्टी में वाद्य यंत्र बजाने वाले बैठ कर वाद्य बजाते हैं और नर्तक दल इनके चारों ओर घूमते हुए नृत्य करते हैं इस नृत्य में करतब नहीं दिखाया जाता है बैठ पार्टी में दो व्यक्ति गाने वाले होते हैं जिसमें एक गाता है और दूसरा दुहराता है इसके विपरीत खड़ी पार्टी में वादक खड़े होकर नाचते हुए वाद्य यंत्रों को बजाते हैं, इसमें एक व्यक्ति समूह के साथ नृत्य करते हुए गाता है और बाकी नर्तक उसे दुहराते हैं। खड़ी पार्टी में करतब दिखाया जाता है। छत्तीसगढ़ी बोली को नहीं जानने-समझने वाले देश-विदेश के लोग भी पंथी नृत्य देख खो जाते हैं। वर्तमान समय में भी यह छत्तीसगढ़ के कलाकारों के परिश्रम और लगन का परिणाम है कि पंथी नृत्य देश-विदेश में प्रतिष्ठित है।

साधेलाल रात्रे नृतक दल द्वारा पंथी की प्रस्तुति

Raman University
Registrar
Kota, Bilaspur (C.G.)

भरथरी नृत्य

भरथरी एक लोकगाथा है जो बिहार, उत्तर प्रदेश और बंगाल के बाद छत्तीसगढ़ की भी लोकगाथा बन गई। भरथरी लोकगाथा किसी विशेष जाति या समुदाय का गीत नहीं है बल्कि कलाकारों का गीत है ये कलाकार गीत गाते हुए स्वयं को योगी कहते हैं। प्रारंभ में कलाकार/योगी अकेले ही खंजरी बजाते हुए भरथरी लोकगाथा गाया करते थे लेकिन समय के साथ-साथ तबला, हारमोनियम और मंजीरा वाद्य यंत्रो के साथ कथा गायन किया जाने लगा, और अब इन वाद्य यंत्रों के बीच बैंजो ने भी अपना स्थान बना लिया। भरथरी लोकगाथा में दो पात्रों को लेकर कथा गायन किया जाता है पहला पात्र है उज्जैन के राजा भरथरी और दूसरा पात्र है राजा भरथरी का भान्जा गोपीचन्द। छत्तीसगढ़ में भरथरी लोकगाथा को लोकप्रिय बनाया सुरुज बाई खाण्डे ने। छत्तीसगढ़ की भरथरी लोकगाथा अन्य क्षेत्रों की तुलना में सर्वाधिक प्रभावशाली एवं कर्णप्रिय है। कोई भी कला जब एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र पहुंचती है तब उस क्षेत्र की संस्कृति और परंपरा से प्रभावित होकर वहीं की बन जाती है। यही कारण है कि भरथरी की कथा उज्जैन नगरी से प्रारंभ होकर जिस भी स्थान पर पहुंची वहां की स्थानीय संस्कृति में ढलती गई और समाज के तत्कालीन समस्याओं के निदान के लिए घटनाओं एवं पात्रों का समय-समय पर सृजन होता गया। छत्तीसगढ़ में भरथरी लोकगाथा के गायन की कला जो सुरुज बाई खाण्डे से प्राप्त हुई है वह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है इसलिए विश्वविद्यालय के द्वारा रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से इसके संवर्धन के लिए ईमानदार और सार्थक प्रयास किया गया। बिलासपुर की सुरुज बाई खाण्डे इस विधा को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाया। विश्वविद्यालय नवम्बर माह में स्थापना महोत्सव आयोजित किया, जिससे विश्वविद्यालय में नवाचार करते हुए विद्यार्थियों के साथ - साथ विश्वविद्यालय के चतुर्थ श्रेणी को भी मंचीय कार्यक्रम करने का अवसर प्रदान किया, जिसमें विश्वविद्यालय की चतुर्थ वर्ग कर्मचारी श्रीमति शकुंतला भारद्वाज ने अद्वितीय प्रदर्शन किया एवं रामन् लोककला महोत्सव के राष्ट्रीय मंच तक का सफर तय किया। विश्वविद्यालय ने श्रीमति शकुंतला भारद्वाज के माध्यम से भरथरी गायन के विलुप्त होती परम्परा को संरक्षित करते हुए स्वयं भी राष्ट्रीय मंचो पर प्रतिस्थापित हुई।

श्रीमती शकुंतला भारद्वाज द्वारा लोकप्रिय भरथरी गीत की प्रस्तुति

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन द्वितीय दिवस

डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय में चल रहे रामन लोक कला महोत्सव के दूसरे दिन 21 अप्रैल को महोत्सव में भारी भीड़ रही। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभागों द्वारा सभी प्रदर्शनी में जानकारी लेने युवा विद्यार्थी और अचंल के लोग यहां पहुंचे। इसी तरह केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार व स्थानीय निकाय के द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी में भी लोग जानकारियां लेते रहे। दूसरी ओर खाई खजाना स्टॉल में सैकड़ों लोगों ने छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का चटकारा लिया। आयोजन के दूसरे दिन आज करमा नृत्य, पंडवानी, डंडा नृत्य धुरवा मड़ई नृत्य और भरथरी की शानदार प्रस्तुतियां हुई जिसे सभी ने सराहा। विश्वविद्यालय के इस आयोजन में आम लोगो ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

द्वितीय दिवस के आयोजन के मुख्य अतिथि एस एसईसीआर के महा बंधक आलोक कुमार ने वि. वि. के द्वारा किये जाने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रशंसा की साथ ही साथ इस कार की आयोजनों को निरंतर बनाये रखने को कहा। आलोक कुमार ने जीवन में लोककला एवं संस्कृति के महत्त्व को बताते हुए आज के मशीन युग में इसे आवश्यक बताया एवं इसे विद्यार्थीयों तक जोड़ने के विश्वविद्यालय के पहल की सराहना की।

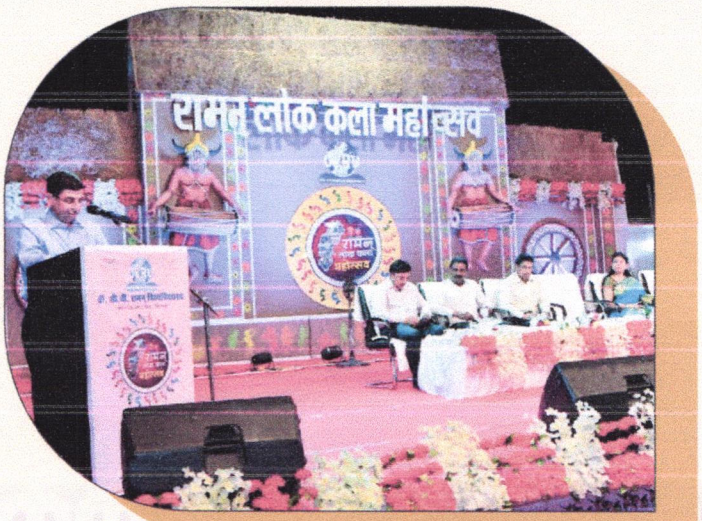

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि बेलतरा विधायक रजनीश सिंह ने कहा कि डा. सी वी रामन विश्वविद्यालय का यह यास छत्तीसगढ़ के लोककला को पहचान दिलाने के साथ साथ उनको अपनी कला को आमजन तक पँहुचाने का कार्य कर रहा है जो कि अत्यंत सराहनीय है। रजनीश सिंह ने विश्वविद्यालय को समाज के लिए कार्य एवं लोककलाा तथा संस्कृति के लिए किए जा रहे कार्यो की प्रशंसा की एवं स्थानीय कलाकरो को मंच प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की प्रशंसा की।

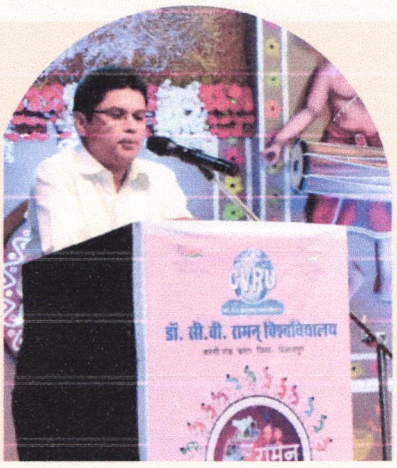

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि कला, संस्कृति, साहित्य, उद्योग, शोध, छत्तीसगढ़ी व्यंजन कलाकार, अतिथि और विद्यार्थी के साथ ग्रामीण अंचल के लोग एक विशेष संयोग आज यहां दिखाई पड़ रहा है। निश्चित रुप से जब इतने विचार एक जगह मिलते हैं। तो वैचारिक क्रांति आती है, मेरा विश्वास है कि इस महोत्सव के बाद हमारे युवाओं के मन में शोध के, संस्कृति के, एवं उद्योग के अन्य रास्ते खुलेंगे। जिसका लाभ विश्वविद्यालय एवं छत्तीसगढ़ को मिलेगा।

सम कुलपति डॉ. जयति चटर्जी मित्रा ने कहा कि भारत गांवों में बसता है। वास्तव में ग्रामीण जीवन शैली, परंपरा, संस्कृति, ही जीवन का मूल आधार है और इस शैली में जीवन जीते हुए व्यक्ति अपने गांव घर में ही आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होता है। लोक कला, संस्कृति, परंपराएं सही मायने में यह आत्मनिर्भर भारत की आत्मा है। इसलिए ही आज केंद्र सरकार वापस गांव की ओर जाकर संस्कृति परंपराओं के साथ जीवन जीने और आत्मनिर्भर होने के लिए कार्य कर रही है । डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय इस दिशा में इस तेजी से कार्य कर रहा है । युवाओं को वापस ग्रामीण प्रौद्योगिकी से जोड़ने, लघु एवं कुटीर उद्योग स्थापित करने, कौशल विकास में दक्ष करने के साथ छत्तीसगढ़ी परंपरा संस्कृति के वास्तविक रुप से अवगत कराने के लिए ऐसे आयोजन कर रहा है। डॉ. जयति चटर्जी ने कहा कि शिक्षा नीति 2020 में भी स्पष्ट रुप से यह प्रावधान किया गया है, कि हम अपनी स्थानीयता के साथ पढ़ाई करें, शिक्षा में बहुत ही बुनियादी स्तर से कौशल विकास को जोड़ा गया है । इसमें संस्कृति व परंपराओं की शिक्षा को भी विशेष स्थान दिया गया है। डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा नीति के अनुरुप भी इस दिशा में गंभीरता से कार्य कर रहा है।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि लोक कला और परंपराओं के साथ युवा रोजगार भी प्राप्त कर सकते है। आज सिर्फ व्यवसायिक पाठ्यक्रम से ही रोजगार मिलता है सिर्फ यह बात सही नहीं है। लोक कलाकार वैश्विक मंच में कंपनियों ब्रांड एमबेस्डर, बड़े विज्ञापनों के आधार बनकर, कई क्षेत्रों से जुड़कर कलाकार सुखद व सफल जीवन यापन कर रहे है। इस क्षेत्र में सम्मान भी बहुत है। युवाओं को आज अपने देश-प्रदेश की कला संस्कृति को समझने और आत्मसाध करने रोजगार में शामिल करने की जरुरत है।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ.अरविंद तिवारी ने कहा कि छत्तीसगढ लोक कला संस्कृति के विभिन्न विधा के कलाकारों को जो छ.ग. प्रदेश के दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में बसते हैं इन्हें विश्वविद्यालय रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से विशिष्ट मंच प्रदान करने का कार्य कर रहा है। इस महोत्सव में बस्तर से लेकर सरगुजा तक की लोक कला की प्रस्तुति से विश्वविद्यालय एवं आसपास के युवाओं को जोड़ने का प्रयास विश्वविद्यालय कर रहा है।

Raman University
Registrar
Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

पंडवानी

छत्तीसगढ़ का एकल नाट्य है पंडवानी। पंडवानी को पद्म विभूषण तीजन बाई ने भारतवर्ष ही नहीं बल्कि विदेशों में भी ख्याति दिलाई है। पंडवानी का अर्थ है पांडववाणी अर्थात् पांडवकथा या महाभारत की कथा। यह कथा परधान तथा देवार जातियों की गायन परंपरा है। परधान गोड़ों की एक उपजाति है और देवार घुमन्तु जाति है।

पंडवानी की दो शैलियां हैं - एक है कापालिक शैली जो गायक-गायिका की स्मृति में या कपाल में विद्यमान है। दूसरी है वेदमती शैली जिसका आधार है शास्त्र। कापालिक शैली वाचक परंपरा पर आधारित है और वेदमती शैली का आधार है खड़ी भाषा के पद्यरुप में। कापालिक शैली की विख्यात गायिका है तीजन बाई, शांतिबाई चेलकने, उषा बाई बारले। पुनाराम निषाद तथा पंचूराम रेवाराम वेदमति शैली के विख्यात गायक कलाकार रहे हैं। दोनों ही शैलियों में भाव-भंगिमाओं के द्वारा प्रस्तुति की जाती है। जब महाभारत के भीम का किरदार करें तो भम नज़र आये, अर्जुन के किरदार में अर्जुन और द्रौपदी का किरदार हो तो द्रौपदी नज़र आये तब इसे कहा जाता है कापालिक शैली। वेदमती शैली के गायक-गायिका वीरासन पर बैठकर पंडवानी गायन करते है। श्री झाड़ूराम देवांगन को पंडवानी का पितामह कहा जाता है। पंडवानी गायन में गायकों की व्यक्तिगत कल्पनाशीलता और तात्कालिकता का प्रस्तुती में बहुत गहरा प्रभाव रहता है। चेतन देवांगन एवं उनके समूह ने पंडवानी नृत्य से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

श्री चेतन देवांगन (दुर्ग) द्वारा पंडवानी नृत्य की प्रस्तुति

Registrar

डंडा नृत्य

यह नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नाम से जाना जाता है, कहीं इसे डंडा नृत्य तो कहीं सैला नृत्य कहते हैं। डंडा नाच एक वृत्ताकार (गोल) आकर में किया जाता है। नृत्य करने वाले समूह के सदस्यों के हाथ में एक से दो डंडे होते हैं। नृत्य के शुरुआत में आपस में नृत्य-ताल बैठाया जाता है, फिर कुहकी देने वाले के कुहकी देने पर संगीत गायन के साथ नृत्य का शुभारम्भ किया जाता है। नृत्य करने वालो के हाथ में जो डंडा होता है, उसे वे गोल घेरे में झूम-झूम कर, उछलकर, झुककर, कभी दाएं तो कभी बाएं होते हुए एक दूसरे के डाँडो पर चोट मारते हैं। बिलासपुर के श्री सहदेव कुमार कैवर्त एवं उनके साथीगण ने इस अवसर पर डंडा नृत्य प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से उन्हें मंच पर अवसर उपलब्ध कराया। मंच पाकर कलाकार कॉफी प्रसन्न हुए, लोगों ने इस प्रस्तुति का भरपूर आनंद उठाया एवं कॉफी सराहना की जिससे कलाकारों का मनोबल बढ़ा।

श्री सहदेव कुमार कैवर्त बिलासपुर द्वारा डंडा नृत्य की प्रस्तुति

धुरवा नृत्य

धुरवा नृत्य बस्तर के आदिवासी समुदाय द्वारा किया जाने वाला प्रमुख नृत्य है। धुरवा युवक-युवतियां वीर रस से परिपूर्ण होकर मड़ई नृत्य करते हैं, पुरुष हाथ में कुल्हाडी एवं मोरपंख का गुच्छा (मंजूरमूठा) लेकर उंगली से मुंह से सुईक-सुईक की आवाज निकाल कर दुश्मनों को ललकारते हुए नृत्य करते है। युवतियां-युवकों के पीछे-पीछे लय मिलाते हुए सामूहिक रुप में नृत्य करती हैं। नृत्य के दौरान हाथ में मोर पंख का गुच्छा (मंजूरमूठा) रखते हैं। गुंडाधुर लोक कला मंच (किंदरवाड़ा, सुकमा बस्तर) ने धुरवा मड़ई नृत्य प्रस्तुत किया। बस्तर से आये हुये इस नृत्क दल को पहली बार विश्वविद्यालय रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से मंच उपलब्ध कराया जिससे कलाकारों का कॉफी उत्साह वर्धन हुआ।

गुंडाधुर लोक कला मंच बस्तर द्वारा धुरवा मड़ई नृत्य की प्रस्तुति

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

कथक

हमारा देश भारत विविधताओं से परिपूर्ण है जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है, जहां शास्त्रीय नृत्य जैसी कला का प्रदर्शन भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। माना जाता है कि अधिकतर शास्त्रीय नृत्य की उत्पत्ति मंदिरों में हुई। धीरे-धीरे यह नृत्य मंदिरों से दरबारों की ओर बढ़ा। हालांकि सभी नृत्य अलग-अलग क्षेत्रों से विकसित हुए हैं जिनकी जड़ें समान हैं। कथक नृत्य उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है।

कथक शब्द का अर्थ कथा को थिरकते हुए कहना है। माना जाता है कि भगवान कृष्ण के रास से कथक नृत्य की उत्पत्ति हुई है इसलिए इसे नटवरी नृत्य भी कहा जाता है। कथक एकल नृत्य है परन्तु अभिनय प्रयोगो के इस दौर में यह समूह में भी प्रस्तुत किया जाने लगा है। भावाभिनय को कथक का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। कथक नृत्य में पैरों का संचालन विशेष रुप से महत्वपूर्ण होता है। इस नृत्य में घुंघरुओं का विशेष महत्व है। कथक नृत्य का वाद्य वृंद बहुत ही सीमित है। इसमें तबला, पखावज और सारंगी वाद्य यंत्रों का प्रमुख स्थान है। कथक नृत्य अपने अलग-अलग घरानों के लिए पहचाना जाता है जयपुर, लखनऊ और बनारस घरानों का समावेश है छत्तीसगढ़ का रायगढ़ घराना। घराने का अर्थ उस विशेष परंपरा से है जो एक पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। कुछ ख्यातिनाम कलाकारों ने कथक के मूल स्वरूप में अपनी सुविधानुसार थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन करके विभिन्न घरानों की स्थापना की और फिर उनका नृत्य उनके घरानों को प्रतीक बनकर प्रचलित होता चला गया। कथक का जयपुर घराना सबसे प्राचीन माना जाता है। जयपुर घराने के प्रवर्तक भानू जी माने जाते हैं। इस घराने में भजन पदों पर बोल बंदिश के माध्यम से भाव दिखाये जाते हैं। लखनऊ घराने की शुरुआत ईश्वरी प्रसाद से मानी जाती है। ठुमरी गाकर भाव बताना इस घराने की विशेषता है। कथक के बनारस घराने का जन्म राजस्थान से माना जाता है। यह घराना जानकी प्रसाद घराने के नाम से भी प्रसिद्ध है। बनारस घराना पैरों की तराश के लिए भी जाना जाता है। छत्तीसगढ़ के राजा चक्रधर महाराज को रायगढ़ कथक का प्रवर्तक माना जाता है जिनके देखरेख में रायगढ़ घराना प्रचारित-प्रसारित हुआ। रायगढ़ घराना के कथक में शब्द, भाव एवं अर्थ का सौंदर्य दिखाई देता है।

डॉ. प्रिया श्रीवास्तव द्वारा कत्थक नृत्य की प्रस्तुति

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

प्रतिवेदन तृतीय दिवस

डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय में चल रहे रामन लोक कला महोत्सव-2022 के समापन अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक एवं संसदीय सचिव रश्मि सिंह के करकमलों से शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक जी ने कहा कि अपनी भाषा, अपनी बोली, अपनी संस्कृति और अपनी कला में बीच ही जीवन होता है। विश्वविद्यालय ने ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए लोक कला महोत्सव की कई वर्षो से निरंतरता बनाई है। इस महोत्सव का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की लोककला, संस्कृति और साहित्य संरक्षण और संवर्धन के साथ उसके मूल रुप में ही भावी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना है। जिसमें भारत के सभी राज्यों के राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों ने शिरकत की है। कम समय, कम सुविधा के बीच संघर्ष करते हुए विश्वविद्यालय ने पूरे देश में अपना नाम स्थापित किया है। उन्होने कहा कि छत्तीसगढ़ी पाठ्यक्रम भी विश्वविद्यालय ने शुरु किया है जो कि विश्वविद्यालय की दूरदर्शिता को दर्शता है।

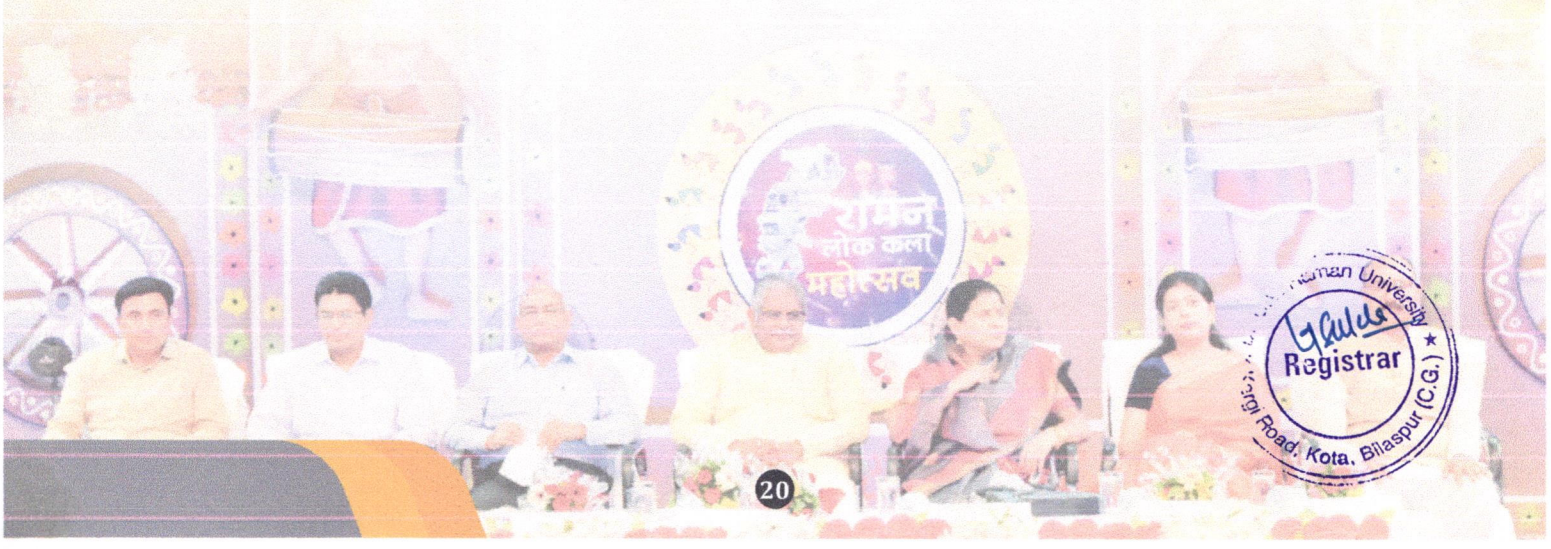

Registrar

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि संसदीय सचिव रश्मि सिंह ने कहा कि हमारी संस्कृति ही हमारी शक्ति है। हर 2-3 दिनों में कोई न कोई पर्व होता है। जिसमें कि हम अपनी कला संस्कृति और परंपराओं के बीच होते हैं, जो सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। इसलिए हम विदेशों के लोगों की तरह कभी भी अवसाद का शिकार नहीं हो सकते। डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय ऐसे ही संस्कृति, कला और परंपराओं से जोड़ने का कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के अध्यक्ष उमेश मिश्रा ने कहा कि डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थापित किया गया है। यह छत्तीसगढ़ राज्य का प्रथम निजी विश्वविद्यालय है,जो वनांचल लेकर ग्रामीण अंचल और शहर के घर-घर तक उच्च शिक्षा की अलख जगा रहा है। डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय ने यह सिद्ध किया है कि आदिवासी क्षेत्र में भी सफलतापूर्वक विश्वविद्यालय संचालित किया जा सकता है। यहां छत्तीसगढ़ी लोककला एवं संस्कृति केंद्र तथा छत्तीसगढ़ी शोध एवं सृजनपीठ के माध्यम से लोककला संस्कृति के संवर्धन एवं सरंक्षण के साथ-साथ इसे मूल रुप में भीवी पीढ़ी को हस्तांरित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। प्रतिवर्ष विश्वविद्यालय परिसर में ही रामन् लोककला महोत्सव में छत्तीसगढ़ के सभी जिलों, दूरस्थ ग्रामीण अंचल और वनांचलों के लोक कलाकार को मंच प्रदान किया जा रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आयोजन के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे ने आयोजन को लेकर भविष्य के योजनाओं की जानकारी दी। महोत्सव के भावी विस्तृत स्वरुप को बताया। इस महोत्सव के बाद युवाओं के मन में शोध संस्कृति उद्योग एवं अन्य रास्ते खुलेंगे। जिसका लाभ विश्वविद्यालय को मिलेगा।

Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि छत्तीसगढ़ के समृद्ध प्राकृतिक तकनीकी ज्ञान परंपरा को प्रदर्शित किया गया है। इस महोत्सव के माध्यम से ग्रामीण अंचल के लोक कला की प्रस्तुति से विश्वविद्यालय एवं आस-पास के युवाओं को जोड़ने का सार्थक प्रयास विश्वविद्यालय कर रहा है।

इस अवसर पर प्रो रमेश चंद्र मिश्रा (डायेरक्टर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एंड कार्मस, डॉयरेक्टर सीआईक्यूए उत्तराखंड ओपन विश्वविद्यालय), डॉ. सुमित प्रसाद (सीआईक्यूए के असिस्टेंट डायरेक्टर उत्तराखंड ओपन विश्वविद्यालय), प्रो. शोभित वाजपेई, डॉ.पुष्कर एवं रेशम लाल प्रधान विशेष रुप से उपस्थित रहे।

अतिथियों के परिसर में मंच भी स्थापित किया एवं छत्तीसगढ़ी संजोही का निरीक्षण भी किया और विश्वविद्यालय के इस प्रयास की सराहना भी की। कार्यक्रम में कुलपति डॉ. जयती चटर्जी, महोत्सव के संयोजक डॉ. अरविंद तिवारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्योतिबाला गुप्ता, डॉ. सृष्टि शर्मा, गिरीश मिश्रा एवं श्रीप्रकाश तिवारी ने किया।

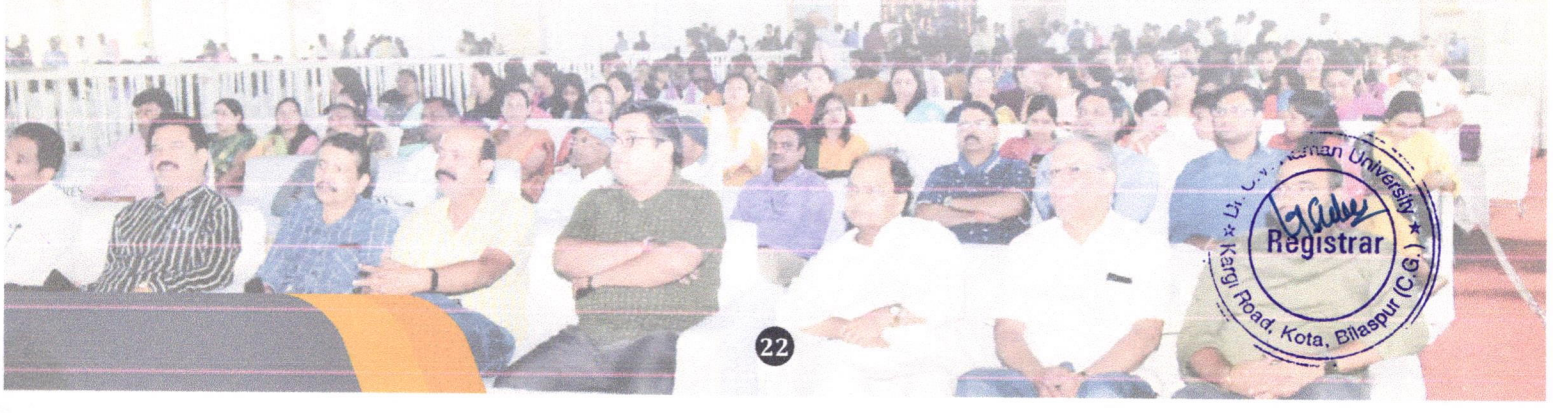

Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

सांस्कृतिक कार्यक्रम तृतीय दिवस

विश्वविद्यालय द्वारा छत्तीसगढ की समाजिक, परम्पराओं, त्यौहारों, गाए जानने वाली विभिन्न प्रकार के गीतों एवं प्रयुक्त होने वाले वाद्ययंत्रों जोकि विलुप्ति के कगार पर है, इनकों संरक्षित करने के लिए विशेष रुप से रामन् लोककला महोत्सव में स्थानीय कलाकारों को तीन दिन पूरा समय प्रदान किया गया, इसमें कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें आर्थिक अनुदान भी प्रदान किया गया। इस वर्ष में रामन् लोककला महोत्सव में विशेष रुप से बांस गीत, गढ़वा / गुदुम बाजा, फाग गीत, एवं पारम्परिक जसगीत और नट समुदाय द्वारा करतब प्रदर्शन आदि को मंच में स्थान प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय के कर्मचारी एवं विद्यार्थीयों ने इस विलुप्त होती विधाओं से परिचित हुए और सभी ने इसका आनंद उठाया।

ककसाड़ नृत्य, गौर-मार नृत्य

बस्तर के घने जंगलों में निवास करने वाले अबूझमाड़िया, गोण्ड, मुरिया सभी लोगों का ककसाड़ से विशेष नाता होता है ये आदिवासियों के जीवन शैली में प्रकृति से सीधा संबंध होता है इस प्रकार जीवन से जुड़ी हर प्रकार की गतिविधि को प्रकृति से जोड़कर जीवन जीते हैं उनके द्वारा जो भी फसल उगाते हैं उसे सबसे पहले प्रकृति सम्मत अपने इष्ट को पहले समर्पित करते हैं फिर उसके पश्चात स्वयं ग्रहण करने की परंपरा का निर्वहन करते हैं। वर्ष भर किसी न किसी उत्सव के साथ जीवन यापन करने वाले आदिवासी ककसाड़ को भी एक उत्सव के रुप में मनाते हैं । इस अवसर पर ग्राम देवी को प्रसन्न करने के लिए सभी ग्राम वासी देवी से अनुमति लेकर शिकार करने जाते हैं और जब शिकार करके गांव वापस लौटते हैं तो खुशी से उत्सव जैसा माहौल होता है जिसे आज भी गांव के युवक युवती इस परंपरा का निर्वहन करते हुए सामूहिक रुप से ककसाड़ के अवसर पर गौर मार नृत्य गोटूल में मनोरंजन के रुप में करते हैं। अबूझमाड़िया, ककसाड़ नृत्य, गौर नृत्य समूह बस्तर नृतक दल को पहली बार विश्वविद्यालय रामन् लोककला के माध्यम से राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराया, कलाकार मंच पाकर काफी खुश थे।

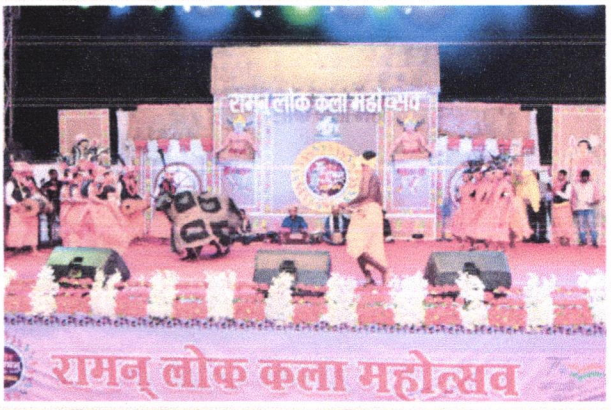

अबूझमाड़िया गौर नृत्य ककसाड़ नृत्य समूह बस्तर की प्रस्तुति

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

गेड़ी नृत्य

छत्तीसगढ़ के बस्तर अंचल में गेड़ी नृत्य को यहां के निवास करने वाले आदिवासी गोण्ड, माड़िया, मुरिया सभी प्रयोग करते हैं । लगभग 5 फीट के बांस को बराबर नाप में काटकर एक फीट में पैर रखने के लिए मजबूत पायदान तैयार किया जाता है जिस पर चढ़कर युवक मनचाहा नृत्य करता है । मान्यता यह भी है कि जब हरियाली त्यौहार से प्रारंभ कर नया खानी त्यौहार तक गांव के गोटूल में सामूहिक रुप से नाचते हैं वहीं यह भी माना जाता है कि जब वर्ष में एक बार तैयार करके विसर्जन किया जाता है तो गांव में फैली चर्म रोग जैसी बीमारियां भी गांव से चली जाती है । साथ बारिश के दिनों में गांव में अधिकांश कीचड़ होता है उससे बचने के लिए भी ग्रामीण इसका उपयोग करते हैं ऐसे समय में एक दूसरे के घर जाने में सुविधा तो होती ही है वहीं कीड़े,मकोड़े,सांप,बिच्छू से भी बचने के लिए गेड़ी का उपयोग आदिवासी आज भी करते आ रहे हैं। कालांतर में इसे नृत्य के रुप में प्रस्तुत करके सबका मन मोह लेते है। यही है गेड़ी नृत्य की विशेषता और आदिवासियों की जीवन शैली से जुड़ी गेड़ी नृत्य मान्यताएं।

अबुझमाड़िया गौर व ककसाड़ नृत्य - तृतीय दिवस के आयोजन में बस्तर के अबुझमाड़ से आए दल ने गौर व ककसाड़ नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। इसमें विश्वविद्यालय में बस्तर की झलक दिखाई दी। इसी तरह रतनपुर के प्रसिद्ध गम्मद और भिलाई से आए ढ़ोलामारु दल ने सबका मन मोहा। कुकुसदा से आई रेखा देवार देवार गीत की प्रस्तुति दी।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

मांदर नृत्य

बस्तर के गोंड आदिवासियों में मांदर का विशेष महत्व होता है, सुविधा के अनुसार अलग अलग प्रकार से तैयार किया जाता है, हल्के लकड़ी से तथा मिट्टी से बनी मांदर को अधिकांश शादी विवाह के अवसर पर नाचा जाता है वैसे गोटूल में यह नृत्य विशेष आकर्षण वाला होता है जो कि गांव के युवक युवती एक लय ताल के साथ नृत्य करते हैं , विशेष ध्वनि से मांदर की थाप सबका मन मोह लेता है बहुत ही साज सज्जा के साथ तोड़ी के धुन से लकड़ी के टेपरा के साथ ताल में ताल मिलाकर पूरी रात रात तक नृत्य करते थकते नहीं जिससे इनके शारीरिक मानसिक तनाव रहित होता है और इस प्रकार से ये खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं ।

मांदर नृत्य की प्रस्तुति देते हुए कलाकार

ढोला मारु

रजनी रजक एवं उनके साथियों द्वारा ढोला मारु प्रेम गाथा की प्रस्तुति

ढोला मारु प्रेम गाथा विशेष लोकप्रिय रही है इस गाथा की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आठवीं सदी की इस घटना का नायक ढोला राजस्थान में आज भी एक-प्रेमी नायक के रुप में स्मरण किया जाता है और प्रत्येक पति-पत्नी की सुन्दर जोड़ी को ढोला-मारु की उपमा दी जाती है इसमे राजकुमार ढोला और राजकुमारी मारु की प्रेमकथा का वर्णन है। राजस्थान की ग्रामीण स्त्रियाँ आज भी विभिन्न मौकों पर ढोला-मारु के गीत बड़े चाव से गाती है। भिलाई से आई हुई श्रीमती रजनी रजक एवं उनके साथियों द्वारा ढोला मारु की प्रेम कथा का वर्णन किया गया। श्रीमती रजनी रजक एवं उनके साथियों को विश्वविद्यालय रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से मंच उपलब्ध कराया जिससे कलाकारों का उत्साह वर्धन हुआ और इसे दर्शकों ने खूब पसंद भी किया।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

गम्मत

छत्तीसगढ़ को लोकजीवन की एतिहासिक, संस्कृति, संस्कार एवं रीतिरिवाज का नाम गम्मत है सामान्यतः रामायण, महाभारत कृष्ण की लीला एवं प्राचीन कथाओं का ही आख्यान होता है। गम्मत के कलाकार इन कथाओं को अपने स्मृति के आधार पर अपनी लोकभाषा में गढ़ लेतें है, गम्मत में एक जोकर होता है जो समय समय में आकर लोगों का मनोरंजन करता है । इसमें गाने और बजाने वाले भी होतें है गम्मत में पुरुष नर्तक महिला वस्त्र एवं आभूषण धारण करके महिला की भूमिका निभाता है इनके अभिनय के अभिव्यक्ति इतना आकर्षक रहता है कि दर्शक के मन को मोह लेता है, आजकल गम्मत में फिल्मीगीत का भी प्रयोग किया जाने लगा है, गम्मत मनोरंजन का साधन ना होकर हमारी संस्कृति के साथ साथ समाज में विभिन्न बुराइयों के ऊपर कटाक्ष करने का माध्यम है। रतनपुरहीया गम्मत छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस अवसर पर श्री काशीराम साहू एवं उनके समूह द्वारा रतनपुरिहा गम्मत प्रस्तुत किया। जिसका ग्रामीण अंचल से आये हुए लोगों एवं छात्रों ने भरपूर आनंद उठाया। इस नृत्क दल को पहली बार विश्वविद्यालय रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से मंच उपलब्ध कराया जिससे कलाकारों का कॉफी उत्साह वर्धन हुआ।

श्री काशीराम साहू एवं उनके साथियों द्वारा गम्मत की प्रस्तुति

देवार गीत

श्रीमती रेखा देवार द्वारा देवार गीत की प्रस्तुति

देवार गीत छत्तीसगढ़ में देवार जाति के लोग गाते है। देवार लोगों के बारे कहा जाता है कि देवार जाति के लोग गोंड राजाओं के दरबार में गाया करते थे। किसी कारण वश इन्हें राजदरबार से निकाल दिया गया था, तब से यह जनजाति कभी इधर तो कभी उधर घूमते रहते है। इसीलिये शायद इनके गीतों में इतनी मधुरता एवं रोचकता है, इनके आवाज में इतनी जादू है। जिन्दगी को और नजदीक से देखते हुये गीत रचते है, नृत्य करते है। देवार गीतों में संघर्ष एवं आनन्द है। इसमें गीतों के माध्यम से कभी वीर चरित्रों के बारे में, अत्याचार के बारे में, पाण्डवगाथा में युद्ध का वर्णन होता है। यह गीत कभी हास्यरस से भरपूर है तो कभी करुणा रस से भरे होते हैं। विश्वविद्यालय ने श्रीमती रेखा देवार के माध्यम से देवार गीत की विलुप्त होती परम्परा को संरक्षित करते हुए इसे जन-जन तक पहुंचाया। इस देवार गीत ने दर्शकों का मन जीत लिया और दर्शकों ने देवार गीत की खूब प्रशंसा भी की।

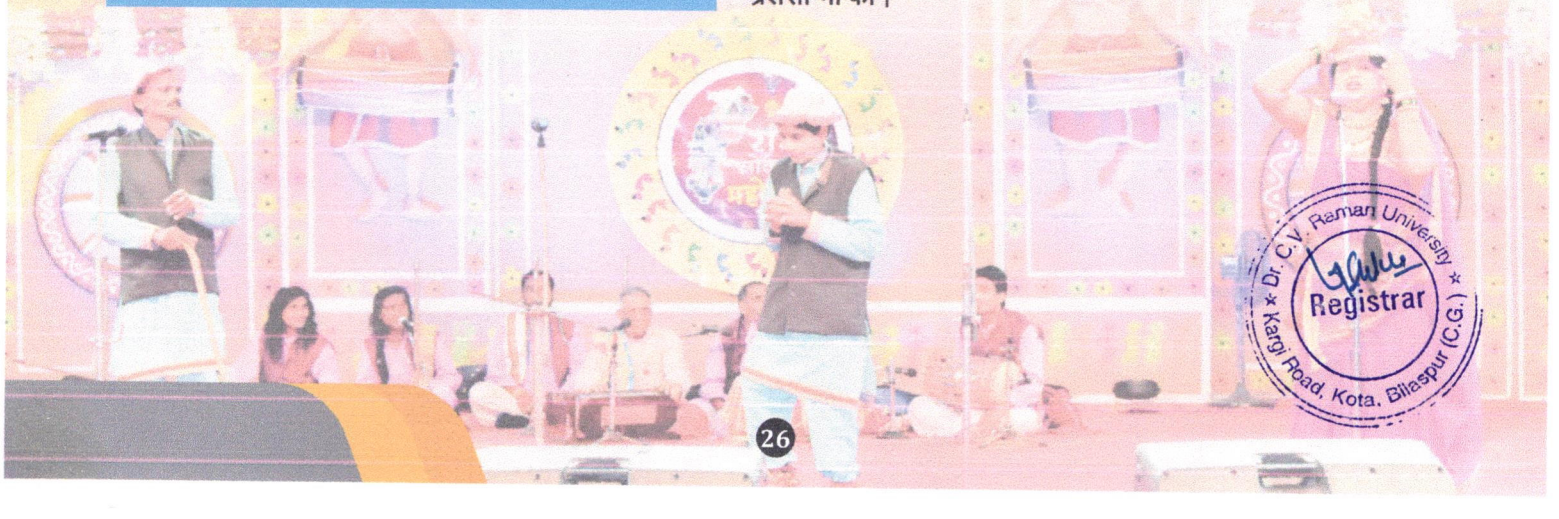

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

बांस गीत

बांस गीत, छत्तीसगढ़ की यादव जातियों द्वारा बांस के बने हुए वाद्य यंत्र के साथ गाये जाने वाला लोकगीत है। बांस गीत मुख्यतः राउत या अहीर जाति के लोगों द्वारा गाया जाता है। समुदाय के केवल पुरुष ही इस वाद्ययंत्र को बजाते हैं। आमतौर पर इस वाद्य यंत्र को कलाकार खुद ही बनाते हैं लेकिन कई बार बढ़ई की मदद से भी इसका निर्माण करवाते हैं। सर्वप्रथम सही बांस का चुनाव किया जाता है फिर उसमें चार छिद्र कर, ऊनी फूलों और रंगीन कपड़ों से साज-सज्जा की जाती है। पारंपरिक प्रदर्शन की बात की जाए तो प्रस्तुति में दो वादक के साथ एक कथाकार और एक रागी होता है। कथाकार जब गाता है या कोई किस्सा सुनाता है तब रागी प्रोत्साहन भरे शब्दों के साथ हामी भरता है। प्रस्तुति से पूर्व माँ सरस्वती, भैरव, महामाया और गणेश जैसे देवी-देवताओं की प्रार्थना की जाती है। परंपरागत रुप से यह प्रदर्शन पूरी रात चलता था लेकिन आज के दौर में बांस गीत की प्रस्तुति आधे घंटे की भी हो चुकी है। विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से मुंगेली से आये हुये कलाकारों को मंच प्रदान किया एवं विलुप्त होती बांस गीत की परम्परा को संरक्षित करते हुए इसे जन-जन तक पहुंचाया। इससे आये हुए कलाकारों का कॉफी उत्साह वर्धन हुआ।

बांस गीत की प्रस्तुति

गढ़वा या गुदुम बाजा

छत्तीसगढ़ के देवउठनी एकादशी के साथ ही पूरे प्रदेश में गढ़वा बाजा की धुन सुनाई देने लगती है। गढ़वा बाजा इस प्रदेश की विशेष पहचान है। छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध पारंपरिक लोक नृत्यों में रावत नाच (नृत्य) का विशेष महत्व है और इस नृत्य की प्रस्तुति गढ़वा बाजा के बिना संभव ही नहीं है। यदि कहा जाए कि गढ़वा बाजा और रावत नाच एक-दूसरे के पूरक हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। गढ़वा बाजा को गुदुम बाजा भी कहा जाता है। माना जाता है कि गाड़ा जाति के लोग दफड़ा, मोंहरी, तासक, मंजीरा, गुदुम (सींघ) बजाया करते थे इसलिए इस वाद्य यंत्र का नाम गढ़वा या गड़वा पड़ा। अब इसे किसी भी जाति या समुदाय के लोग बजाया करते हैं। गढ़वा बाजा के निर्माण के लिए लोहे के कढ़ाईनुमा आकार में चमड़ा मढ़ा जाता है। चमड़ा मोटा होता है जिसे रस्सी से खींचकर कसा जाता है। इसे बजाने के लिए टायर की मोटी बठेना बनाया जाता है। बजाने वाले वादक को निशनहा कहा जाता है। आदिवासी क्षेत्रों में इसके दोनों तरफ बारहसिंगा के सींग को लगा दिया जाता है इसलिए इसे सींग बाजा भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ में इसे मांगलिक कार्यों में बजवाया जाता है। ग्रामीण अंचल आये हुये कलाकारों को पहली बार विश्वविद्यालय ने रामन् लोक कला महोत्सव के माध्यम से मंच प्रदान किया। महोत्सव में आये हुए ग्रामीण एवं छात्रों ने इस गुदुम बाजा का कॉफी आनंद उठाया।

गढ़वा / गुदुम बाजा की प्रस्तुति

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

नगाड़ा

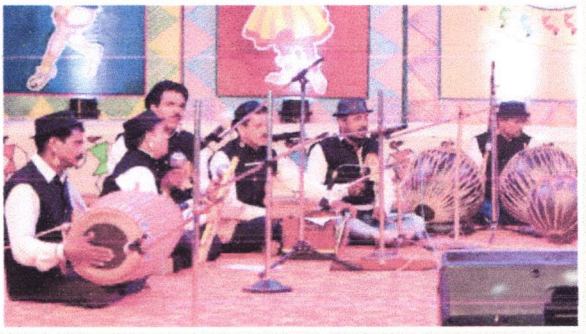

नगाड़ा की प्रस्तुति देते हुए ग्रामीण अंचल से आये हुए कलाकार

छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में जितना महत्व लोक गीतों और लोक नृत्य का है उतना ही महत्व लोक वाद्यों का भी है। लोक गीतों में प्रयुक्त वाद्य और नृत्य एक-दूसरे के सहगामी हैं। नगाड़ा एक ऐसा वाद्य यंत्र है जो भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी बजाया जाता है। होली के समय फाग गीतों में नगाड़े को बजाया जाता है। नगाड़ा जोड़े में बजाया जाता है किन्तु दोनों अलग-अलग होते हैं एक की आवाज़ पतली और दूसरे की आवाज़ मोटी होती है। नगाड़े को लकड़ी की डंडियों से बजाया जाता है जिसे बठेना कहा जाता है। नगाड़े का निर्माण मिट्टी या लकड़ी और चमड़े से किया जाता है जिसमें पकी हुई मिट्टी का कड़ाही नुमा खोल बनाया जाता है जिसके उपर चमड़ा मढ़ा जाता है। नगाड़े को लोकनाट्यों एवं मांगलिक कार्यक्रम में भी बजाया जाता है। प्राचीन काल में नगाड़े को युद्ध के समय भी बजाया जाता था। ऐतिहासिक तथ्य की बात करें तो किसी सरकारी घोषणा को आम जनता तक पहुंचाने के लिए नगाड़ा पीटा जाता था।

नट समुदाय (डंगचघा)

नट समुदाय (डंगचघा) की प्रस्तुति देते हुए कलाकार

नट एक खानाबदोश समुदाय है जो छत्तीसगढ़ के अलावा अन्य राज्यों में भी फैले हुए हैं। छत्तीसगढ़ी में उन्हें डंगचघा कहा जाता है, जिसका अर्थ है, डांग या रस्सी पर चढ़ने या चलने वाला। दरसअल शुरुआत में यह घुमंतु जाति थी। इनका काम गांव-गांव में घूमकर करतब दिखाना था। यह समुदाय गाना, बजाना, रस्सी पर चलना और बाजीगरी दिखाने का काम करता रहा है। इनके द्वारा शरीर के अंग-प्रत्यंग को लचीला बनाकर भिन्न-भिन्न मुद्राओं में प्रदर्शित करते हुए लोगों का मनोरंजन किया जाता है और इस कार्य के माध्यम से ही यह समुदाय अपनी आजीविका संचालित करता है। नटों में प्रमुख रुप से दो उपजातियां हैं, बजनिया नट और ब्रजवासी नट। बजनिया नट प्रायः बाजीगरी, कलाबाजी और गाने-बजाने का कार्य करता है जबकि ब्रजवासी नटों में स्त्रियां नर्तकी के रुप में नाचने-गाने का कार्य करती है और उनके पुरुष या पति उनके साथ साजिन्दे (वाद्य यंत्र बजाने) का कार्य करते हैं।

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

जसगीत

जसगीत की प्रस्तुति देते हुए कलाकार

छत्तीसगढ़ का लोक जीवन गीतों के बिना अधूरा है। छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोकगीतों में जस गीत का अहम स्थान है। इस गीत के माध्यम से आल्हा उदल की शौर्य गाथा, माता के श्रृंगार और माता की महिमा का बखान किया जाता है। प्राचीन काल में जब चेचक महामारी के रुप में पूरे गांव में छा जाता था तब गांव में चेचक प्रभावित व्यक्ति के घरों में इसे गाया जाता था। जसगीत मुख्यतः क्वांर और चैत्र नवरात्र में नौ दिनों तक गाया जाता है। नवरात्रि में पहला दिन जवारा बोया जाता है और नवमी के दिन उसका विसर्जन होता है। विसर्जन के लिए जाते हुए महिलाएं जस गीत गाती हैं। जवारा के जस गीत में देवी धनैया और देवी कोदैया की आराधना की जाती है जो क्षेत्रीय स्तर की लोक माताएं हैं। इन दोनों माताओं को फसलों की देवी भी कहा जाता है क्योंकि छत्तीसगढ़ धान और कोदो फसल के लिए प्रसिद्ध है। पारंपरिक रुप से जसगीत में मांदर, झांझ एवं मंजिरा बजाया जाता है। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ के जसगीतों में नित नये अभिनव प्रयोग किये जा रहे हैं। इस गीत में स्थानीय देवियों का वर्णन एवं अन्य धार्मिक प्रसंगों को जोड़ा जा रहा है इसके साथ ही अन्य वाद्य यंत्रो को शामिल कर नया प्रयोग अनवरत रुप से किया जा रहा है।

C.V. Raman University
Registrar
Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन् लोककला महोत्सव 2022

स्टॉल का विवरण

विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकार के स्टॉल भी लगाए जाते हैं, जो मूलतः ग्रामीण परिवेश, आत्मनिर्भरता एवं विभिन्न ग्रामीण हस्तकला, लोककला एवं जैविक उत्पादन से संबंधित था। स्टॉलों में छत्तीसगढ के पारम्परिक खानपान की व्यव्स्था एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा ज्ञान आधारित विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनी भी लगाए गए थे। महोत्सव में विशेष रुप से छत्तीसगढ़ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं परम्परागत अनाज संस्करण को भी प्रदर्शित किया गया था। इन स्थलों से विद्यार्थीयों ने न केवल अपने जड़ों को पहचाना बल्कि युवा पीढी ने आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता के भी गुण सीखे और प्रेरणा ली।

ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग : विश्वविद्यालय के ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा नरवा, गरवा, घुरवा, बारी का मॉडल बनाया गया था। जिसमें कि छत्तीसगढ़ सरकार की मंशा को बताया गया। डॉ. अनुपम तिवारी द्वारा हर्बल उत्पाद साबुन, हैंडवाश, फिनायल सहित मेडिसिनल प्लांट के बारे में भी जानकारी लोगों प्रदान की गई एवं छात्रों ने घर पर ही साबुन, हैंडवाश, फिनायल तैयार करने की विधियाँ सीखी और साथ ही साथ आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता के गुण भी सीखे।

रसायन (केमेस्ट्री) विभाग : विश्वविद्यालय के रसायन विभाग द्वारा वेस्ट मटेरियल से पॉवर जनरेशन का मॉडल बनाया गया था। जिसे ग्रामीण अंचल से आये हुये लोगों एवं छात्रों ने कॉफी पसंद किया। रसायन विभाग के अखिलेश शर्मा ने इस पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ी साहित्य विभाग : डॉ. रेखा दुबे द्वारा छत्तीसगढ़ साहित्य के इतिहास, लेखन, पठन, साहित्यकारों के बारे में जानकारी दी एवं छात्रों को आत्मनिर्भर बनने के लिए साहित्य को अपने जीवन में लाने की बात बताई गई।

खेल विभाग : शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेल पर एक आकर्षित स्टॉल लगाया गया जिसमें छत्तीसगढ़ के तीस से अधिक खेलों की जानकारी दी गयी। विद्यार्थी बड़ी संख्या में यहां पहुंचे और खेल संबंधी जानकारियाँ एकत्रित की। यह पूरी जानकारी डॉ. युवराज श्रीवास्तव द्वारा प्रदान की गयी।

मोती कृषक एवं आयुर्वेदिक उत्पाद : इस स्टाल में पूजा विश्वकर्मा ने घर में ही मोती उत्पादन के बारे में जानकारी प्रदान की जा सके माध्यम से विद्यार्थी घर में रहकर पढ़ाई के साथ-साथ अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते है और आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

मृदा शिल्प : तखतपुर के नरेश कुमार प्रजापति ने ऑर्गेनिक मृदा एवं मृदा शिल्प से जुड़ी बहुत सी जानकारी विद्यार्थियों के साथ साझा किया और छात्र एवं आये हुये ग्रामीण अंचल के लोगों को स्थानीय कला कौशल से जुड़ने और आत्मनिर्भर बनने के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान किया।

जयश्री हर्बल : प्रवीण लेडवानी जी ने छोटी-छोटी हर्बल जो हमारे आस पास उपलब्ध है लेकिन हमे जानकारी नहीं है जैसे तुलसी अस्वगंधा, सोंफ, एलोवेरा से लाभकारी फायदे के बारें में जानकारी प्रदान की।

विधि विभाग : विश्वविद्यालय के विधि विभाग द्वारा विधिक साक्षरता का स्टॉल लगाया गया है। जिसमे ग्रामीण लोगों एवं छात्रों को विधि सहायता केन्द्र एवं विधि संबंधी कानून के संबंध में ज्ञान रोचक बातें बताई गई और अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के कानून के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

Registrar
Raman University
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

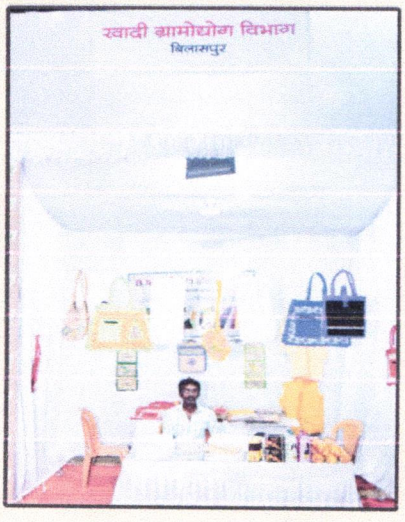

रामन् लोककला महोत्सव 2022

स्टॉल का विवरण

वुडन आर्ट / रॉट आयरन आर्ट / बेलमेटल (साथी समाज सेवी संस्था) : बस्तर के हरि भारद्वाज ने वुडन आर्ट, रॉट आयरन आर्ट, बेलमेटल से बनने वाले सामग्री एवं बनाने की विधि के संबंध में जानकारी प्रदान किया गया। इसमें प्रमुख रुप से वुडन आर्ट से बनने वाले नृतक मूर्तियाँ, तीर, धनुष, कठपुतलियाँ आदि संबंध में बताया। इसमें ग्रामीण अंचल के लोगों एवं छात्रों ने कॉफी रुचि दिखाई। इसके माध्यम से छात्रों को रोजगार परख एवं आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रेरित किया गया।

अभियांत्रिकी विभाग : इंजीनियरिंग विभाग से विद्यार्थी अनंग टडार के द्वारा बनाया गया, चश्मे का मॉडल आकर्षण का केंद्र रहा। जिसमें की नेत्रहीन व्यक्ति को पहले से सामने रुकावट का भास होगा और उसे चलने में सुविधा होगी। इस मॉडल को राष्ट्रपति द्वारा भी पुरस्कृत किया जा चुका है।

आदिवासी विकास विभाग बिलासपुर : आदिवासी विकास विभाग द्वारा यहां अंचल के आदिवासी, अनुसूचित जनजाति, जाति, पिछड़ा वर्ग के छात्र एवं लोगों को शासन की जानकारी प्रदान की गयी इसके साथ ही विभिन्न योजनाओं व लाभ के बारे में भी बताया गया।

वनौषधि उत्पाद, संजीवनी मार्ट वन विभाग बिलासपुर : कृषि विज्ञान एवं अनुसंधान केंद्र कोनी द्वारा किसानों को उन्नत खेती उत्पादन का तरीका सहित विभिन्न प्रकार की जानकारी भी प्रदर्शनी में दी गयी। स्टॉल के माध्यम से ग्रामीण अंचल में मिलने वाले औषधियों को भी प्रदर्शित किया गया।

कृषि अनुसंधान केन्द्र, कोनी बिलासपुर : कृषि अनुसंधान केन्द्र, कोनी, बिलासपुर द्वारा एक विशेष स्टॉल भी लगाया गया जिसमें उन्नत तरीके से कृषि करने के साथ-साथ जैविक कृषि के संबंध में जानकारी प्रदान किया गया एवं ग्रामीण लोग एवं छात्रों को जैविक कृषि को अपनाकर रोजगार परख एवं आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रेरित किया गया।

केन्द्रिय रेशम अनुसंधान केन्द्र बिलासपुर : महोत्सव में केंद्रीय रेशम बोर्ड एवं शोध संस्थान द्वारा कोकून उत्पादन प्रक्रिया को विस्तार से जीवंत बताया। महोत्सव में आये हुए लोगों ने कॉफी सराहा।

उद्यान विभाग बिलासपुर : इस स्टॉल के माध्यम से ग्रामीण एवं छात्रों ने बागवानी फसलों, उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में वृद्धि करने से सम्बंधित जानकारी प्राप्त की एवं छात्रों को ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं आत्मनिर्भरता के संबंध में जानकारी दी गई।

खादी ग्रामोद्योग खादी ग्राम उद्योग विभाग बिलासपुर : की ओर से श्रीमती प्राची मालवी खादी वस्त्र निर्माण, प्रक्रिया एवं खादी वस्त्र के बारे में विभिन्न प्रकार की जानकारी भी प्रदान की और स्थानीय कला कौशल से अवगत कराया।

बैल मैटल : रायगढ़ के भोगीलाल झारा ने स्टाल के माध्यम से वस्तुएँ बनाने की तकनीक एवं प्रक्रिया के बारे बताया साथ बैल मैटल से बनने वाले उपयोगी सामग्री जैसे घंटी, निर्तक मूर्तियाँ, प्लेट, गिलास, दिया के बारे जानकारी प्रदान की।

ललित कला विभाग : डॉ. प्रिया श्रीवास्तव ने स्टॉल के माध्यम से ललित कला में नृत्य, संगीत, थियेटर, कठपुतली, प्रदर्शन कला को एक विशेष रुप से अपने जीवन में शामिल करने और स्थानीय कला से छात्रों को विभिन्न प्रकार की जानकारी दी।

क्रॉफ्ट एंड क्रियेशन : स्टॉल के माध्यम से स्थानीय लोगों द्वारा हाथ से बनने वाले आभूषण, कागज के फूल, गुलदस्ते बनाने की विधि विस्तार से ग्रामीण एवं छात्रों को बताया एवं इसके माध्यम से छात्रों को रोजगार परख एवं आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रेरित किया गया।

Raman University
Registrar
Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

दैनिक भास्कर बिलासपुर भास्कर 21-04-2022

dainikbhaskar.com दैनिक भास्कर, बिलासपुर, गुरुवार 21 अप्रैल, 2022

लोककला महोत्सव • पहले दिन कर्मा और ककसाड़ नृत्य ने लोगों का मन मोहा

आदिवासियों व उनकी संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाएगी सीवीआरयू: राज्यपाल

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

राज्यपाल ने कहा- विवि परिवार सौभाग्यशाली, जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति

डॉ. सीवी रामन यूनिवर्सिटी में बुधवार को रामन लोक कला महोत्सव 2022 का आगाज हुआ। महोत्सव का शुभारंभ प्रदेश की राज्यपाल अनुसुइया उइके ने किया। पहले दिन कर्मा और ककसाड़ नृत्य ने लोगों का मन मोह लिया। सिद्धेश्वर कर्मा नृत्य मंडली पड़ीगांव तमनार रायगढ़ के कर्मा नृत्य मंडली ने शानदार प्रस्तुति दी। गांव की तर्ज पर गुड़ी भी बनाई गई है। छत्तीसगढ़ी व्यंजन का स्टॉल भी आकर्षण का केंद्र रहा। राज्यपाल ने कहा कि उइके ऐसे आयोजनों के माध्यम से आदिवासी कला संस्कृति साहित्य परंपराओं को बड़ा मंच दे रहा है। ऐसे आयोजन से ही वह विश्व पटल पर अपना स्थान, पहचान बना सकेंगे। उन्होंने कहा कि मुझे यह बात कहने में गर्व है कि देश-विदेश में आज आदिवासी संस्कृति को स्वीकार किया जाता है। हर अवसर पर वैश्विक स्तर पर एक अलग पहचान आदिवासी संस्कृति की है। उन्होंने यह भी कहा कि पूरी दुनिया में केवल छत्तीसगढ़ की संस्कृति ऐसी है, जिसकी महक हर किसी को बहुत पसंद आती है। छत्तीसगढ़ का संगीत मधुर और हृदय को छू लेने वाला है। यहां के आदिवासी लोग बहुत ही भोले भाले हैं, छल-कपट से हमेशा दूर रहते हैं। उन्होंने विवि के कुलाधिपति की प्रशंसा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय परिवार बहुत ही सौभाग्यशाली है, जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति हैं। जिनका हर क्षेत्र में बराबर अधिकार है। सांसद अरुण साव ने कहा कि निश्चित रूप से आदिवासियों को मंच मिला है। उन्हें ऐसे आयोजन में शामिल होने से सम्मान मिलेगा आत्मविश्वास बढ़ेगा।

हर क्षेत्र में नंबर वन है डॉ. सीवी रामन यूनिवर्सिटी: चौबे

सीवीआरयू के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र में स्थापित प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है, जो आदिवासी लोगों को युवाओं को शिक्षा की मूल धारा से जोड़ने और उन्हें समाज के बराबर स्थापित करने का कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री कौशल विकास केंद्र संचालित करने वाला एकमात्र विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है। यहां सामुदायिक रेडियो रामन स्थापित किया गया है, जो कि केंद्र सरकार के सहयोग से स्थापित है। उन्होंने कहा कि दुप एशिया का सबसे बड़ा आयोजन विश्वरंग आयोजन भी करता है, जिसमें कि 50 से अधिक देश शामिल होते हैं।

शिक्षा के साथ कला और संस्कृति का अद्भुत संयोग: धर्मजीत

विशिष्ट अतिथि लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि भारत गांवों में बसता है और यहां की कला संस्कृति ही जीवन है। विश्वविद्यालय लोक कला संस्कृति साहित्य को संरक्षण देना और इसके संवर्धन के लिए कार्य कर रहा है। सीवीआरयू में शिक्षा के साथ संस्कृति का अद्भुत संयोग है। जल, जंगल और जमीन के असली मालिक आदिवासी ही हैं और ऐसे लोगों की कला संस्कृति और साहित्य परंपराओं को संरक्षित करने का महान कार्य विश्वविद्यालय कर रहा है।

अभाव के बाद विवि तरक्की की: गौरव

कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि सही मायने में सीवीआरयू अभाव में रचना शीलता की पराकाष्ठा का नाम है। कम समय और सुविधाओं के अभाव में विवि स्थापित किया गया था, लेकिन रचनाशीलता व संघर्ष के कारण आज बहुत ही कम समय में मध्य भारत का सबसे बड़े विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित है।

छत्तीसगढ़ी विभाग खोला गया है: प्रो. दुबे

कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि विवि स्थानीय भाषा, बोली, कला, संस्कृति साहित्य को बढ़ावा देते आ रहा है। छत्तीसगढ़ी विभाग की स्थापना भी की गई है। लोक कलाकारों को मंच प्रदान करने महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। संयोजक डॉ. अरविंद तिवारी ने आभार प्रदर्शन किया।

धर्म-समाज/बिलासपुर

आदिवासी संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाएगी सीवीआरयू

लोक कला महोत्सव 2022 का आगाज, राज्यपाल ने कहा- विवि परिवार सौभाग्यशाली, जिनके पास विद्वान कुलाधिपति

हर क्षेत्र में नंबर वन है सीवीआरयू: चौबे

आदिवासी बढ़ेगा सम्मान

कला व संस्कृति का अद्भुत संयोग: धर्मजीत

कर्मा और ककसाड़ नृत्य ने मोहा मन

हरिभूमि बिलासपुर - बिलासपुर भूमि 21 Apr 2022

लोक कला महोत्सव-2022 का आगाज

आदिवासियों व उनकी संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाएगा सीवीआरयू : राज्यपाल

कर्मा और ककसाड़ नृत्य ने मोहा मन

आज के कार्यक्रम

ऐसे आयोजन में शामिल होने से बढ़ेगा आत्मविश्वास: साव

शिक्षा के साथ कला-संस्कृति का अद्भुत संयोग: धर्मजीत

हर क्षेत्र में नंबर वन है सीवीआरयू : चौबे

गुड़ी का आनंद

छत्तीसगढ़ी व्यंजन के स्टॉल

नवभारत Bilaspur City - 21 Apr 2022 - 21nya2

राज्यपाल ने कहा -विवि परिवार सौभाग्यशाली, जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति

आदिवासियों की संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाएगा सीवीआरयू: राज्यपाल

■ नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर. www.navabharat.news

■ लोक कला महोत्सव-2022 का हुआ आगाज

डॉ. सी वी रामन विश्वविद्यालय में आज रामन लोक कला महोत्सव 2022 का आगाज हुआ. महोत्सव का शुभारंभ प्रदेश की महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके ने किया. इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि डा. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय ऐसे आयोजनों के माध्यम से आदिवासी कला संस्कृति साहित्य परंपराओं को बड़ा मंच दे रहा है, और ऐसे आयोजन से ही वह विश्व पटल पर अपना स्थान पहचान बना सकेंगे. उन्होंने कहा कि मुझे यह बात कहने में गर्व है कि देश विदेश में आज आदिवासी संस्कृति को स्वीकार किया जाता है. उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की प्रशंसा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय परिवार बहुत ही सौभाग्यशाली है जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति है जिनका हर क्षेत्र में बराबर अधिकार है.इस अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि सही मायने में डाक्टर सी. वी. रामन विश्वविद्यालय आभाव में रचनाशीलता की पराकाष्ठा का नाम है. उन्होंने बताया कि बहुत ही कम समय और सुविधाओं के अभाव में विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रविप्रकाश दुबे ने कहा कि विश्वविद्यालय सदैव से ही स्थानीय भाषा बोली कला संस्कृति साहित्य को बढ़ावा देते आ रहा है. आभार प्रकट डॉ. अरविंद तिवारी ने किया. **गुड़ी में मजा:** विश्वविद्यालय परिसर में गांव की तर्ज पर गुड़ी बनाई गई है जिसमें की अंचल से आए अमोनी कलाकारों ने नगाड़ा, बांस गीत, गड़वा बाजा, जस गीत सहित कई कलाकार रात तक अपनी प्रस्तुति दी अंचल के लोगों ने उसका आनंद लिया.

ऐसे आयोजन में शामिल होने से सम्मान मिलेगा :साव

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित बिलासपुर सांसद अरुण साव ने कहा कि डा सी. वी. रामन विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति परंपराओं के सम्मान को पुनः प्रतिस्थापित करने का कार्य कर रहा है.

कला और संस्कृति का अद्भुत संयोग है सीवीआरयू में : धर्मजीत

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि भारत गांवों में बसता है और यहां की कला संस्कृति ही जीवन है. यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है, कि वर्ष 2019 से लगातार यहां रामन लोक कला महोत्सव आयोजित किया जाता है.

हर क्षेत्र में नंबर वन है सीवीआरयू

इस अवसर पर उपस्थित डॉ सी. वी. रामन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र में स्थापित प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जो आदिवासी लोगों को युवाओं को शिक्षा की मूल धारा से जोड़ने और उन्हें समाज के बराबर स्थापित करने के लिए कार्य कर रहा है. उन्होंने बताया कि इसके साथ इसे प्रधानमंत्री कौशल विकास केंद्र संचालित करने वाला एक मात्र विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है.

कर्मा और ककसाड़ नृत्य ने मोहा मन

पहले दिन आज कर्मा और ककसाड़ नृत्य ने लोगों का मन मोह लिया. पारंपरिक वेशभूषा में सजे धजे आदिवासी मांदर की थाप पर थिरकते नजर आए. सिद्धेश्वर करमा नृत्य मंडली पड़ीगांव तमनार रायगढ़ के करमा नृत्य मंडली ने शानदार प्रस्तुति दी. मांदर की थाप पर सभी का मन थिरकने लगा इसके बाद बस्तर से आए नागरू राम के ककसाड़ नृत्य में बस्तर की झलक दिखाई दी. बस्तर के हर रंग को उन्होंने ने दिखाया.

C.V. Raman University, Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) Registrar

पत्रिका क्राइम & अलर्ट 16 पत्रिका patrika.com
बिलासपुर, गुरुवार, 21 अप्रैल 2022

लोक कला महोत्सव- 2022 का हुआ आगाज : राज्यपाल ने कहा विवि परिवार सौभाग्यशाली, जिनके पास विद्वान कुलाधिपति

आदिवासियों व उनकी संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाएगा सीवीआरयू-राज्यपाल

बिलासपुर @ पत्रिका. डॉ सी वी रामन् विश्वविद्यालय में बुधवार को रामन् लोक कला महोत्सव 2022 का आगाज हुआ। महोत्सव का शुभारंभ प्रदेश की राज्यपाल अनुसुइया उइके ने किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि डॉ सी वी रामन् विश्वविद्यालय ऐसे आयोजनों के माध्यम से आदिवासी कला संस्कृति साहित्य परंपराओं को बड़ा मंच दे रहा है और ऐसे आयोजन से ही वह विश्व पटल पर अपना स्थान व पहचान बना सकेंगे।

उन्होंने कहा कि मुझे यह बात कहने में गर्व है कि देश विदेश में आज आदिवासी संस्कृति को स्वीकार किया जाता है। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति की प्रशंसा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय परिवार बहुत ही सौभाग्यशाली है जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति हैं जिनका हर क्षेत्र में बराबर अधिकार है। इस अवसर पर कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ शिक्षा देने के साथ ही साथ छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति, साहित्य को भावी पीढ़ी तक वास्तविक रूप में हस्तांतरित करने का बीड़ा भी सीवीआरयू ने उठाया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि विश्वविद्यालय सदैव से ही स्थानीय भाषा बोली कला संस्कृति साहित्य को बढ़ावा देते आ रहा है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अरविंद तिवारी ने कहा विश्वविद्यालय लोक कला को संरक्षित संवर्धित करने के लिए संकल्पित है।

आज का आयोजन 21 अप्रैल ...

शिक्षा के साथ कला व संस्कृति का अद्भुत संयोग है सीवीआरयू में - विधायक धर्मजीत

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह ने कहा कि भारत गांवों में बसता है और वहां की कला संस्कृति ही जीवन है। यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि वर्ष 2019 से लगातार यहां रामन लोक कला महोत्सव आयोजित किया जाता है। विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की लोक कला संस्कृति साहित्य को संरक्षण देने और इसके संवर्धन के लिए कार्य कर रहा है।

ऐसे आयोजन में शामिल होने से सम्मान मिलेगा आत्मविश्वास बढ़ेगा- सांसद साव

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित बिलासपुर सांसद अरुण साव ने कहा कि डॉ सी वी रामन विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति परंपराओं के सम्मान को पुनः प्रतिस्थापित करने का कार्य कर रहा है निश्चित रूप से आदिवासियों को मंच मिला है उन्हें ऐसे आयोजन में शामिल होने से सम्मान मिलेगा आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह वैश्विक मंच तक अपने आप को सक्षम महसूस कर पाएंगे।

नवभारत Bilaspur Main - 22 Apr 2022 - 22bsp 8

शिक्षा के साथ संस्कृति, जीवन को ले जाती है श्रेष्ठता की ओर: आलोक

रामन लोक कला महोत्सव में उमड़ी भीड़, युवा विद्यार्थी और अंचल के लोग दिनभर जानकारी लेने पहुंचते रहे

छत्तीसगढ़ी साहित्य पर लगाया गया विशेष स्टॉल

लोकस्वर 9

राज्यपाल ने कहा- विवि परिवार सौभाग्यशाली, जिनके पास ऐसे विद्वान कुलाधिपति

आदिवासियों व उनकी संस्कृति को वैश्विक स्तर तक पहुंचाएगा सीवीआरयू: राज्यपाल

शिक्षा के साथ कला और संस्कृति का अद्भुत संयोग: धर्मजीत

हर क्षेत्र में नंबर वन है सीवीआरयू

आज का आयोजन

बिलासपुर स्वर लोकस्वर

डॉ. सीवी रामन में आयोजित महोत्सव के एसईसीआर के महाप्रबंधक रहे मुख्य अतिथि

शिक्षा के साथ संस्कृति, मनुष्य जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाती है: आलोक कुमार

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क

बिलासपुर। डॉ सीवी रामन विश्वविद्यालय में चल रहे रामन लोक कला महोत्सव के दूसरे दिन आज महोत्सव में भारी भीड़ रही उमड़ी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभागों द्वारा सभी प्रदर्शनी में जानकारी लेने युवा विद्यार्थी और अंचल के लोग यहां पहुंचे। इसी तरह केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार व स्थानीय निकाय के द्वारा लगाए गए प्रदर्शनी में भी लोग जानकारियां लेते रहे। दूसरी ओर खाई खजाना स्टल में सैकड़ों लोगों ने छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का चटकारा लिया। आयोजन के दूसरे दिन आज करमा नृत्य, पंडवानी, डंडा नृत्य, भुरवा मड़ई नृत्य और भरथरी की शानदार प्रस्तुतियां हुई जिसे सभी ने सराहा। दूसरे दिन आयोजन के मुख्य अतिथि एसईसीआर के महाप्रबंधक आलोक कुमार ने कहा कि संस्कृति का सीधा तालमेल जीवन होता है, जो जीवन संस्कृति से जुड़ा होता है वो उच्च स्तर तक जाता है। उच्च स्तर तक जाने के लिए शिक्षा की जरूरत भी होती है। इसलिए शिक्षा में संस्कृति का होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की दूर दूरदर्शिता का परिचय देता है कि संस्कृति और शिक्षा के आयोजन यहां हो रहे हैं। ऐसे आयोजन से प्रबंधन स्थानीयता से जुड़ता है, जिससे सकारात्मक उर्जा का संचार होता है साथ ही साथ ही विद्यार्थी भी रूटिन से हटते है और माहौल बदलता है जो उन्हें रचनाशीलता की ओर ले जाता है।

रामन लोक कला महोत्सव में उमड़ी भीड़

डॉ. सीवी रामन विश्वविद्यालय में 20 अप्रैल से चल रहे रामन लोक कला महोत्सव 2022 के दूसरे दिन आज कोटा के पूरे अंचल और कलाकार, एवं विद्यार्थियों की भारी भीड़ उमड़ी। यहां विश्वविद्यालय के ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा नरवा गरवा घुरवा बाड़ी का मॉडल बनाया गया है। जिसमें कि सरकार की मंशा को बताया गया। विभाग डॉ. अनुपम तिवारी द्वारा हर्बल उत्पाद साबुन हैंडवाश फिनायल सहित मेडिसिनल प्लांट के बारे में भी जानकारी लोगों को दी गई। इसी तरह छत्तीसगढ़ी साहित्य पर केंद्रित एक विशेष स्टाल भी लगाया गया। जिसमें कि डॉ. रेखा दुबे द्वारा छत्तीसगढ़ साहित्य के इतिहास, लेखन, पठन, साहित्यकारों के बारे में जानकारी दी जा रही है। विश्वविद्यालय के रसायन विभाग द्वारा वेस्ट मटेरियल से पावर जनरेशन की का मॉडल बनाया गया है। जिसमें की विभाग के अखिलेश शर्मा ने पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी जा रही है। इंजीनियरिंग विभाग से विद्यार्थी अनंत टंडन के द्वारा बनाया गया, चश्मे का मॉडल आकर्षण का केंद्र रहा। जिसमें की नेत्रहीन व्यक्ति को पहले से सामने रूकावट का भास होगा और उसे चलने में सुविधा होगी। इस मॉडल को राष्ट्रपति द्वारा भी पुरस्कृत किया जा चुका है।

परंपराओं के साथ रोजगार भी

सम कुलपति डॉ. जयति चटर्जी मित्रा ने वास्तव में ग्रामीण जीवन शैली, परंपरा, संस्कृति ही जीवन का मूल आधार है, और इस शैली में जीवन जीते हुए व्यक्ति अपने गांव घर में ही आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होता है। डॉ. जयति चटर्जी ने कहा कि, शिक्षा नीति 2020 में भी स्पष्ट रूप से यह प्रावधान किया गया है, कि हम अपनी स्थानीयता के साथ पढ़ाई करें, शिक्षा में बहुत ही बुनियादी स्तर से कौशल विकास को जोड़ा गया है। इसमें संस्कृति व परंपराओं की शिक्षा को भी विशेष स्थान दिया गया है। डॉक्टर सी वी रामन विश्वविद्यालय उक्त शिक्षा नीति के अनुरूप भी इस दिशा में गंभीरता से कार्य कर रहा है। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव गौरव शुक्ला ने कहा कि लोक कला और परंपराओं के साथ युवा रोजगार भी प्राप्त कर सकते है। आज व्यावसायिक पाठ्यक्रम से ही रोजगार मिलता है सिर्फ यह बात सही नहीं है। लोक कलाकार वैश्विक मंच में कंपनियों ब्रांड एम्बेस्डर, बड़े विज्ञापनों के आधार बनकर, कई क्षेत्रों से जुड़कर कलाकार सुखद व सफल जीवन यापन कर रहे है। इस क्षेत्र में सम्मान भी बहुत है। युवाओं को आज अपने देश- प्रदेश की कला संस्कृति को समझने और आत्मसात करने रोजगार में शामिल करने की जरूरत है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ.अरविंद तिवारी ने कहा कि छत्तीसगढ़ लोक कला संस्कृति के विभिन्न विधा के कलाकारों को जो छग प्रदेश के दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में बसते है इन्हें विवि रामन लोक कला महोत्सव के माध्यम से विशिष्ट मंच प्रदान करने का कार्य कर रहा है।

कलाकारों को पुर्नजीवित करने का कार्य

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि बेलतरा विधायक रजनीश सिंह ने कहा कि सीवीआरयू कला महोत्सव के माध्यम से कलाकारों को पुर्नजीवित करने का कार्य कर रहा है। आज हम अपनी संस्कृति को भूलकर टीवी मोबाइल में खो रहे है। जिसके कई दुष्प्रभाव जीवन में दिखाई दे रहे है। आने वाले दिनों में अंतर्राष्ट्रीय कलाकार यहां अपनी प्रस्तुति देंगे ऐसा मेरा विश्वास है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे है। आयोजन के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि कला, संस्कृति, साहित्य, ... छत्तीसगढ़ी व्यंजन कलाकार, अतिथि और विद्यार्थी के साथ ग्रामीण अंचल ... विशेष संयोग आज यहां दिखाई पड़ रहा है। निश्चित रूप से ... मिलते है। तो वैचारिक क्रांति आती है, मेरा विश्वास है, कि इस महोत्सव के बाद ... युवाओं के मन में शोध, संस्कृति, उद्योग एवं अन्य ... विश्वविद्यालय एवं छत्तीसगढ़ को मिलेगा।

Dr. C.V. Raman University * Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.) * Registrar

रामन लोक कला महोत्सव

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

रामन लोक कला महोत्सव

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)

DR. C.V.RAMAN UNIVERSITY

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, जिला- बिलासपुर (छ.ग.)

Dr. C.V. Raman University
Registrar
Kargi Road, Kota, Bilaspur (C.G.)